तेज साप्ताहिक मनोरंजन टैक्स १ रुपया
दीवाना

पंचतंत्र
खानदानी दुश्मनी
रीछपाल, देखता है यह क्या है ? यह रामपुरी चा
यह किस लिए है ठाकुर साहब ?
इस नाग के खानदान से पुरानी दुश्मनी चली आ रही है उन्होंने मेरा नाना मारा । मैंने सारे खानदान का सफाया कर दिया । केवल एक बच्चा बच गया । वह जवान हो गया होगा आजकल में बदलालेने आयेगा ।
ठाकु
नेवलि
तो आप इससे उसके टुकड़े-टुकड़े कर देंगे ?
ठाकुर साहब हैं घर पर ?
शssssss ! यह तो वही नाग लगता है ? चलकर इससे पूछता हूं कि यह लड़ने के लिए कौन सा हथियार लेकर आया है ? शायद बड़ी भयंकर लड़ाई होगी में देख सकूंगा ?
हा हा हा हा कैसी लड़ाई ? अरे पुरानी खानदानी बा आजकल कौन परवाह करता है । मैं एक सेल्जमै गया हूं में तो ठाकुर साह प्लास्टिक का कंघा आ रहा हूं ।प्लास्टिक कम्पनी का सेल्जमै
सचमुच ?
क्या ? तुम मुझे प्लास्टिक का कंघा बेचने आये हो,लड़ने नहीं ? तुम कुंअर नागराज पाल के बेटे होकर सेल्जमैन बने हो ? छी छी ॥ खानदान की नाक कटवा दी तुमने । मैं जिन्दगी भर तुमसे दो-दो हाथ करने की तमन्ना लिए बैठा रहा और तुम दगा दे रहे हो ? इस चाकू का क्या होगा ? मेरा क्या होगा अब ? यह भी न सोचा तुमने सेल्जमैन बनने से पहले ! सारी उम्र तुम्हारे लिए मैंने चाकू पर धार लगाने में गुजार दी । मेरी सारी मेहनत पर पानी फेर रहे हो । जाओ, हट जाओ मेरी नजरों के सामने से कायर ।
रीछपाल, में इस तरह हार मानने वाला नहीं । सेल्जमैन हूं । फिर आऊंगा अगली बार अगरबत्तियां और टेल्कम पाउडर लाऊंगा । कभी न कभी कुछ न कुछ ठाकुर के मत्थे चेप ही दूंगा ।
यह क्या किया ठाकुर साहब आपने ?
अपने ही पेट में चाकू मार कर मर रहा हूं ! आssssह । अब जिन्दगी में करने को रह ही क्या गया है ?
शिक्षा—जो जमाने के साथ बदल नहीं पाते वे समाप्त हो जा

साप्ताहिक भविष्य

पं० कुलदीप शर्मा ज्योतिषी
सुपुत्र दैवज्ञ भूषण पं० हंसराज शर्मा

मेष : मित्र के सहयोग से काम बनते रहेंगे खर्च ज्यादा होगा, मिश्रित फल मिलेंगे, वैर-विरोध से परेशानी, सेहत नरम, वातावरण सुधरेगा, भाग्य सहारा देगा, कारोबार ठीक चलेगा, यात्रा की आशा है।

वृष : समस्यायें घटती बढ़ती रहेंगी, नई वस्तुओं की खरीद पर व्यय, काम कुछ देर से पूरे होंगे, यात्रा सफल रहेगी, दिन ठीक नहीं, यात्रा छोड़ दें, कोई अप्रिय घटना हो सकती है, परेशानी बढ़ेगी।

मिथुन : परेशानियों के बावजूद भी हालात सुधरेंगे, कारोबार बढ़ेगा और लाभ भी अच्छा होगा, यात्रा की आशा है, अधिक लाभ देर से या आशा से कम मिलेगा, भाग्य साथ देता रहेगा, लाभ पहले ही समान है।

कर्क : मिले-जुले फल प्राप्त होंगे, कामों में सफलता पर कुछ देर से मिलेगी, आय से व्यय अधिक, यात्रा कष्टदायक रहेगी, अन्य हालात ठीक चलेंगे। वातावरण अनुकूल रहेगा, आय-व्यय यथार्थ ही।

सिंह : सावधानी से रहें, झगड़े आदि में परेशानी, कोई नई उलझन पैदा होगी, व्यय बढ़ेगा, खर्च तो कुछ कम होगा, परन्तु लाभ भी आशा के अनुसार न हो पायेगा, बड़े लोगों के परामर्श से काम बन जायेंगे।

कन्या : व्यय के साथ-साथ लाभ भी होता रहेगा, शत्रु-रोग एवं बाधाओं पर विजय पायेंगे, परन्तु गुस्से पर नियंत्रण रखें तो अच्छा है, वैर-विरोध से परेशानी, जल्दबाजी से काम लेना अच्छा नहीं।

तुला : रोजगार मन्दा, भाग्य सहारा देगा, लाभ समय पर होता रहेगा, काम बन जायेंगे, कठिन परिश्रम एवं संघर्ष का सामना, सेहत नरम, यात्रा हो सकती है, शत्रु परास्त होंगे, किसी नजदीकी मित्र या पड़ौसी से परेशानी।

वृश्चिक : लाभ खर्च बराबर, बड़े लोगों से सम्पर्क, सेहत कमजोर, काम धन्धों में अड़चन हालात सुधरेंगे, रुकावटें दूर होंगी, कारोबार भी ठीक चलने लगेगा, परिश्रम द्वारा काम सिद्ध हो जायेंगे, यात्रा न करें।

धनु : लाभ सामान्य होता रहेगा, विरोधी पक्ष से चिन्ता, यात्रा में परेशानी, घरेलू झंझट अधिक रहेंगे, संघर्ष काफी रहेगा, अच्छी संगति से बिगड़े काम बन जायेंगे, धर्म-कर्म में रुचि बढ़ेगी।

मकर : व्यापार में उन्नति, भाग्य साथ देगा और परिश्रम करने पर काम बनते रहेंगे, शत्रु मुंह की खायेंगे, संघर्ष काफी करना पड़ेगा, काम में अड़चन, रोजगार, मन्दा, अफसरों से कुछ परेशानी।

कुम्भ : रोजगार धन्धा ठीक चलेगा, आत्म बल से अभीष्ट कार्य सिद्ध होंगे, यात्रा व्यर्थ की ही होगी, हानि का भय है, सावधानी में रहें, अन्य हालात में सुधार होगा, रुकावटें दूर होती जायेंगी, यात्रा न करें तो अच्छा है।

मीन : व्यय अधिक, लाभ कम, रोजगार में बाधा या परेशानी, जल्दबाजी से काम न करें, लाभ की संभावना बनेगी, भाग्य साथ देगा, काम बनते जायेंगे, शत्रु पर विजय रुकावटें दूर होंगी, लाभ बढ़ेगा।

आपके पत्र

दीवाना का नया अंक प्राप्त हुआ। पढ़कर खुशी का ठिकाना न रहा। काका के कारतूस, मोटू-पतलू, आपस की बातें पढ़कर खुशी हुई। कृपया आप यह बताने का कष्ट करें कि दीवाना आप देर से क्यों भेज रहे हैं।

बलीराम धर्मानी-रायपुर

दीवाना को समय पर भेजने की कोशिश जारी है। —सं०

अंक न० ३५ मिला। मुख प्रष्ठ देखते ही हंसी और मुस्कराहट का मिला-जुला फव्वारा छूट पड़ा। मोटू-पतलू की पार्टी 'जनता आर० एस० एस० सोशलिस्ट कांग्रेस दल' ने तो हंसा-हंसा कर बेहाल कर दिया। और बाकी सब फीचर भी बहुत ही मजेदार थे।

भाटिया—सम्बरा

आज ही मैंने दीवाना पढ़ा, पढ़कर बहुत खुशी हुई। वैसे मैं दीवाना का बहुत शौकीन पाठक हूं। दीवाना अंक में पिलपिल, मोटू-पतलू और बन्द करो बकवास से मैं प्रभावित हूं। मैं दीवाना का वार्षिक ग्राहक बनना चाहता हूं। इसके लिए मैं क्या करूँ? आप कृपा कर मुझे जानकारी देवें। मेरी शुभ कामना है कि दीवाना हमेशा चटपटा रहे।

प्रेमनारायण शर्मा (राजस्थान)

वार्षिक ग्राहक बनने के लिए आप हमें ४८ रु० मनीआर्डर से भेज दें। —सं०

दीवाना का अंक ३५ पढ़ा। जिसमें 'परोपकारी', 'बात-बेबात की' अच्छा लगा। लेकिन, 'काका के कारतूस' व 'मोटू-पतलू' बहुत ही प्रिय लगे। दीवाना फ्रेंड्स क्लब में सभी मेम्बर्स की फोटू साफ प्रकाशित की गई। मुख पष्ठ ने इस बार निराश किया। कृपया इस ओर ध्यान दें।

दीनदयाल शर्मा—(राजस्थान)

दीवाना का अक ३५ मिला, मुख पृष्ठ को देखकर हंसते-हंसते पेट में दर्द हो गया। इस अंक में परोपकारी, मोटू-पतलू, सिलबिल पिलपिल, आदि मानव बेहद पसंद आये।

इस बार मोटू-पतलू को रंगीन न देखकर बहुत अफसोस हुआ। कृपया मोटू-पतलू को रंगीन दिया करें। यह अंक बेहद पसंद आया।

रवी पुरी—हैदराबाद

बहुत दिनों की बेकरारी के बाद १५ जनवरी ८० का अंक मिला। परन्तु अंक में प्रस्तुत सामग्री पढ़कर इतना मजा आया कि पूछिये मत!

बन्द करो बकबास, नया आविष्कार, दीवाना चुनाव प्राइमर, पिलपिल सिलबिल, आदि मानव तथा ढोल का पोल पढ़ते-पढ़ते इतनी हंसी आई कि डाक्टर के पास जाना पड़ा।

रमेश कुमार—जनौली

दीवाना का नये वर्ष का प्रथम आकर्षक अंक प्राप्त हुआ। मुख पष्ठ जहां रोचकता से परिपूर्ण था वहीं इस अंक में नये स्तम्भों ने प्रभावित किया।

अनुसरण, मोटू-पतलू, दीवाना चुनाव प्राइमर, सिलबिल-पिलपिल, ढोल की पोल विशेष रूप से पसन्द आये। कृपया आप घसीटाराम को इतना न घसीटा करें क्योंकि इस बार के अंक में उनकी दुर्दशा देखकर आंखों में आँसू आ गये।

उमेश ज्ञानचंदानी 'प्रेमी'—(बिलासपुर)

दीवाना का नया अंक प्राप्त हुआ। दीवाना को मैं दो साल से पढ़ता हूं। पिलपिल सिलबिल के लम्बे-चौड़े हँसाने वाले कारनामों में प्रत्येक दीवाना ने बहुत हंसाया। चिल्ली लीला, मोटू-पतलू आदि बहुत रोचक लगे।

सचमुच आपकी पत्रिका व्यंग की अनूठी है। आपकी पत्रिका से केवल हँसी ही नहीं जानकारी भी प्राप्त होती है। गुमनाम है कोई तथा रंग भरो प्रतियोगिता प्रत्येक दीवाना में भेजा करें तो बड़ी मेहरबानी होगी। आशा है कि आगामी अंक भी इसी तरह हास्य रस से भरपूर होंगे।

ऋषिराज तिवारी—फतेहपुर

मुख पृष्ठ पर

जब सुनहरी धूप में
धरती पर छा जाते हो तुम
मुफ्त में भरपेट जूस
रोज पी जाते हो तुम
न कभी पेड़ों को सींचा
न कभी पानी दिया
शुक्रिया इस मेहरबानी
का तुम्हारी शुक्रिया

अंक : ४ वर्ष १६ : १ मार्च १९८०

सम्पादकः विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिकाः मंजुल गुप्ता
उपसम्पादकः कृपा शंकर भारद्वाज
दीवाना तेज साप्ताहिक
८-ब, बहादुरशाह जफर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

चन्दे की दरें वार्षिकः ४८ रु०
छमाहीः २५ रु० द्विवार्षिकः ९५ रु०

● स्याना भाव

एक था दामाद ।

उसने अपने ससुर को, जो एक पत्रिका के कुशल सम्पादक थे, एक पत्र में लिखा :

'मैं अपने भाई-भतीजों के साथ सैर-सपाटे हेतु आ रहा हूं । अत: घर पर रहने व खाने का पूरा प्रबन्ध करने की कृपा करेंगे ।'

ससुर-संपादक ने दामाद के उक्त पत्र पर निम्नलिखित नोट लगाकर वापस लौटा दिया :

'स्थानाभाव के कारण क्षमा याचना सहित ।'

● असली-नकली

किसी आदमी ने पुलिस को फोन कर दिया कि असली राम के पास नकली माल भंडार है ।

सूचना मिलते ही एक कुमुक छापा मारने हेतु असली राम के फ्लेट पर पहुंच गई ।

'आपके पास जितना भी नकली माल है, तुरन्त ही हमारे सामने पेश करें वरना ...' और इंसपेक्टर साहब आगे पिस्तौल तान कर खड़े हो गये ।

असली राम के चेहरे का रंग पीला पड़ गया । वह थर-थर कांपने लगा । डर के मारे उसके मुख से एक शब्द भी नहीं निकल पाया ।

इंसपेक्टर झल्लाए, 'क्या सोच रहे हो ? नकली माल निकालते हो या मैं अपनी कानूनी कार्यवाही करूं ?'

कांपते हुए हाथों से असली राम ने अपने नकली बाल इंसपेक्टर के हाथ में थमा दिए ।

तत्पश्चात उन्होंने मुंह खोलकर अपने नकली दांत निकाल दिए ।

फिर बाएं हाथ से उन्होंने अपनी दाईं बांह को झटका दिया । दाईं बांह निकल आई । वह लकड़ी की बनी हुई थी । उसके बाद उन्होंने एक टांग भी इन्सपेक्टर के सुपुर्द कर दी ।

अब असली राम रुआं सा बोला, 'मेरी यह दाईं आंख पत्थर की है । कहें तो इसे भी...'

इंसपेक्टर क्रोधित होकर चीखा, 'ठहरो ! हमें किसी ने गलत सूचना दी है । सूचना नकली निकली ।' ●●

● प्रशंसा

एक कवि महोदय लड़की पसंद करने

गये । लड़की बड़ी सुन्दर थी । उस महाशय से रहा न गया । वह शायराना अंदाज में लड़की से बोला, 'मैं आपके सौंदर्य की किन शब्दों में प्रशंसा करूं, समझ में नहीं आ रहा है ।'

उस भोली-भाली लड़की की आंखें क्षण भर के लिए फड़फड़ाईं, अचानक उसको एक बात सूझी । वह धीरे से अपने स्थान से उठी और कमरे में चली गई । वह जब वापस आई तो उसके हाथ में एक शब्दकोश था । उसे कवि महाशय की ओर बढ़ाते हुए बोली, 'यह लीजिए शब्दकोश ।' अब आपको शब्द ढूंढ़ने में सुविधा होगी ।'

● भाग्यशाली

एक कहानीकार और एक कवि किसी विषय पर बहस कर रहे थे । अचानक एक आदमी आया और कवि के हाथ में कुछ रुपए टिकाते हुए बोला :

'आपके नये कविता-संग्रह 'मजबूरी' की सभी प्रतियां खत्म हो गईं । यह रहा उसका कैश भुगतान ।'

कहानीकार ने चकित होकर कहा, 'अरे यार, सप्ताह पहले ही तो तुम्हारी नई
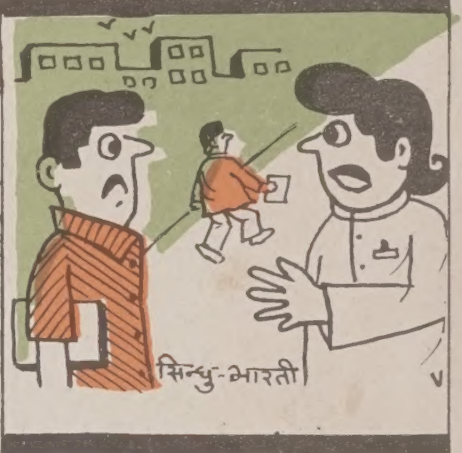
पुस्तक प्रकाशित हुई थी, और आज सभी प्रतियां बिक भी गईं ? बड़े भाग्यशाली हो तुम !'

कवि ने ठंडी सांस लेते हुए कहा, 'बंधुवर, यह 'पुस्तक-विक्रेता' नहीं बल्कि 'रद्दी विक्रेता' है ।'

बम और बम

● हुक्का

दिवाली के दिन
'टुनटुन' को
एटम बम छुटाते हुए देखकर
अचानक
रुक गये मेरे कदम ।
तभी
बोल उठा/मेरा मित्र
यार ! क्या देख रहे हो तुम ?
मैंने कहा मित्र !
कुछ अजीब
नजारा नजर आ रहा है ।
बम एटम बम छुटा रहा है ।

रुकावट के लिये खेद है

कल पुर्जों की खराबी आने पर टी० वी० वाले तो इसे दिखाते ही हैं क्यों न इसका प्रयोग जीवन के दूसरे क्षेत्रों में भी किया जाये ? उदाहरण देखिये—

खाना बनाते बनाते अचानक गैस खत्म हो जाये तो गृहिणी डाइनिंग टेबल पर यह बोर्ड खड़ा कर सकती है।

रु कावट के लिये खेद है

बॉस और प्राइवेट सैक्रेटरी मीठी-मीठी बातें कर रहे हैं और बीच में किसी को आवश्यक कार्य से बॉस के कमरे में जाना पड़ जाये तो इसका प्रयोग हो सकता है।

तसल्ली देने के लिए पत्नी पति पिक्चर जाने को तैयार हों और बीबी का मेकअप अभी पूरा न हुआ हो तो पतिदेव को अपने श्रृंगार कक्ष के दरवाजे पर यह प्रयोग करें।

कवि सम्मेलन या ग्रामसभा में जूते, टमाटर व आलू चलने लग जायें तो कवि या भाषण कर्ता बचाव के लिए लौटने से पहले माइक से यह पट्ट लटका दें।

कक्षा में पढ़ाते-पढ़ाते टीचर को हैडमास्टर का बुलावा आये तो ब्लैक बोर्ड पर टीचर जाते-जाते इस प्रकार खेद प्रकट कर सकते हैं।

रु कावट के लिये खेद है

तुतलाने वाले बात करते-करते बीच में किसी शब्द पर आ-आ-आ कर अटक जायें तो यह बोर्ड दिखा सकते हैं।

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें।

सैयद अल्हर हुसैन—बम्बई : कृपया दीवाना के लिये चुटकुले भेजने का पता बताइये।

उ० : दीवाना के लिये किसी भी प्रकार की सामग्री भेजनी हो, पता एक ही है : सम्पादक दीवाना साप्ताहिक, ८-ब, बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-११०००२।

अब्दुल कलाम—फतहपुर : चाचा जी, मेरे पास दीवाना के सौ सवासौ अंक पड़े हैं। मैं उन्हें एक स्कूल को दान करना चाहता हूं। आपकी क्या राय है?

उ० : बड़ी नेक राय है आपके इस शुभ विचार पर। आप तो दीवाना के अंक दान कर रहे हैं। हमने तो दीवाना के किसी नेत्र हीन प्रेमी के लिये अपनी आंखें दान कर दी हैं।

डा० सतीन्द्र जैन, सुदर्शी—जेबरा : चाचाजी आप किस फिल्मस्टार के फैन हैं?

उ० : हम अभी तक सवाल का फैसला नहीं कर पाये हैं। वैसे जहाँ तक पंखा झलने का प्रश्न है, सभी फिल्मस्टार हमारे फैन हैं।

हेमन्त कुमार सुंहालका—चित्तौड़गढ़ : राजनारायण के बालों को अजायब घर में रखना चाहिए या स्वयं राजनारायण को?

उ० : हर चीज अजायब घर के लिये नहीं होती कुछ चीजें चिड़ियाघर के लिये होती हैं।

सवर्ण सायमी, 'आशाकुन्ति,' कालियाटी—काठमाण्डो : क्या मैं दीवाना के लिये अपनी फोटो भेजकर फ्रैन्डस क्लब का "लाईफ मैम्बर" बन सकता हूँ।

उ० : फोटो भेजने वाला "लाईफ मैम्बर" ही बन जाता है सवर्ण जी। हमारे कुछ प्रेमियों की शिकायत है (गलत शिकायत है) कि जब तक फोटो छपने का नम्बर आता है, उनकी पूरी लाईफ गुजर जाती है।

लखमी चन्द माधवानी—मेहर : हम आपको कुर्ते पाजामे का कपड़ा दान करना चाहते हैं। कृपया बताइये कितना कपड़ा लगेगा।

उ० : छोड़िये साहब। हमने बता दिया तो आप कहेंगे, यह तो तम्बु सिलवाने का हिसाब बता दिया।

मनोज कुमार गोस्वामी—देवघर : चाचाजी, क्या सिलबिल और पिलपिल की तकदीर भी घसीटा राम से मिलती जुलती है?

उ० : जी नहीं। कहाँ सीधे-साधे सिलबिल, पिलपिल और कहाँ चलता पुर्जा घसीटाराम, उसे तो अगर इस बात का शक भी हो जाये कि उसकी तकदीर किसी और की तकदीर से मिलती है तो वह अपनी तकदीर पत्थर से फोड़ ले।

नरेन्द्र कुमार गाबा—हांसी : चाचा जी, कहते हैं, समय पर गधे को भी बाप बनाना पड़ता है, पर यदि उस समय गधा बाप बनने से इन्कार कर दे तो...?

उ० : तो समझना चाहिये हम उसके बाप हैं। वैसे रिश्ते जताने की यह बातें बहुत उलझी हुई होती हैं। एक बार एक देहाती अपने लड़के को स्कूल में दाखिल करने ले जा रहा था और साथ-साथ ही उसे शिष्टाचार की बातें भी समझा रहा था। बाप ने बेटे से कहा, "देखो बेटा, मास्टर जी के प्रश्न का जैसा उत्तर मैं दूं वैसा ही तुम देना।" बेटे ने बाप की यह बात गांठ बांध ली। स्कूल पहुंचने पर मास्टर जी ने बाप से पूछा, 'यह किसका बेटा है? "बाप ने उत्तर दिया, 'जी आप का ही है।" अब मास्टर जी ने लड़के से पूछा, "क्यों बेटा, यह तुम्हारे पिता हैं?" इस पर लड़के ने उत्तर दिया, "जी, आपके ही ही हैं।"

नरिन्द्र निन्दी—कपूरथला : सब्र का पैमाना छलक जाये तो क्या करना चाहिये?

उ० : सब्र को किसी और बड़े पैमाने में उलट लेना चाहिये ईरान में अमरीका यही कर रहा है।

पाल्हमल भोटवानी—परतवाड़ा : कोई काम जोश में करना चाहिये या होश में?

उ० अगर काम दूसरे का सर फोड़ने का हो तो होश में और अगर अपना सर फूटने से बचाने का हो तो जोश में।

कंचन कुमार श्रीवास्तव, पडरौना—देवरिया : चाचा जी, संसार में ऐसा कौन है, जो जीवन में कभी न रोया हो?

उ० : ऐसे बहुत से होंगे जिन्होंने जीवन में कभी विवाह न किया हो। हम किस-किस के नाम गिनवायें।

पंडित मेवालाल—महोबा : आप अपनी धर्म पत्नी को सबसे अधिक कब चाहते हैं?

उ० : क्या आप इस प्रश्न का सही-सही उत्तर पाकर यह चाहते हैं कि हमारा हमारे ही घर में घुसना बन्द हो जाए?

बजरंग शर्मा—श्रीगंगानगर : चाचा जी, अरमान भरा दिल कब टूट जाता है?

उ० : इसके लिए एक शेर अर्ज है :

हमारे शीशए दिल को सम्भल कर हाथ में लेना,
नजाकत इसमें ऐसी है, नजर से जब गिरा टूटा।

संतोष कुमार—चक्रधरपुर, बिहार :
मुझको कांटों के बदले तुम गुलाब क्या दोगे?
मुझको मस्ती के बदले तुम शराब क्या दोगे?
चलोगे तुम क्या मेरे साथ-साथ मंजिल तक?
मेरे इस प्रश्न का बोलो जवाब क्या दोगे?

उ० : हमको बदले में बता दो जनाब क्या दोगे?
जवाब दे भी दिया तो कबाब क्या दोगे?

रणजीत सिंह—मैहर : चाचा जी, मैं अपनी गर्लफ्रेंड को आप से मिलवाऊं तो कैसा रहेगा?

उ० : मतलब है उसकी आंखें सूर्य ग्रहण देखने से बच गई होंगी तो आप अब उनका भट्ठा बिठवा देंगे।

होली का त्यौहार

● शिवांशु शाहजहांपुरी

होली में बहने लगी, रंगों भरी बयार।
केसर रंग गुलाल की, चहुंदिशि पड़े फुहार।
चहुंदिशि पड़े फुहार, ठिठोली रंग जमाये।
बाल, वृद्ध औ युवक, युवतियां नाचे-गायें।
कह शिवांशु कविराय, बजे घर-घर शहनाई।
गले लग रहे हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख-ईसाई।
प्रेम-प्रीति का पर्व है, होली का त्यौहार।
कहीं हास-परिहास है, कहीं लुट रहा प्यार।
कहीं लुट रहा प्यार, हो रही खातिरदारी।
मौज मनाते नाच-कूद कर, नर औ नारी।
कह शिवांशु कविराय, प्रकृति की छटा निराली।
नयी ज्योति से आलोकित है, डालो-डाली।

आपस की बातें
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुर शाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

पशु-शक्ति वाला सुपरमैन ऐलेन
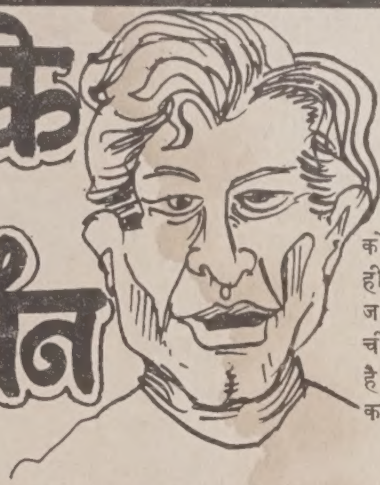
दीवाना के जिन पाठकों को अमरीकी कॉमिक कथा "मैन विद एनिमल पावर्स" का परिचय प्राप्त नहीं है उनकी सूचना के लिये निवेदन है कि इस कथा का हीरो सुपरमैन ऐलेन को ऐसी शक्ति प्राप्त है कि किसी जानवर के निकट आते ही उसके शरीर में उस जानवर के गुण व शक्तियां आ जाती हैं जैसे ऐलेन चीते के निकट आये तो अचानक उसमें चीते की सी फुर्ती और चीते के बराबर ही ताकत आ जाती है। अपनी इसी शक्ति के बल पर वह कई हैरत अंग्रेज कारनामे करता है। यहां ऐलेन की कॉमिक कथा की पैरोडी पढ़िये।

प्रसिद्ध बागी वैज्ञानिक बेरियम सल्फेट खां दुनिया से नफरत करता है। वह इस धरती को नष्ट करना चाहता है। उसके रास्ते में ऐलेन ही एक मात्र रोड़ा बनकर अटका हुआ है। एक दिन ऐलेन बटखल झील पर मछलियां पकड़ रहा होता है कि बेरियम सलफेट खां वहां पहुंचता है। वह झील पर अपने टायफून गन से वार करता है। अचानक जैसे पानी फट पड़ा हो! झील का पानी हजारों मीटर ऊपर आसमान तक छितरा जाता है। पानी की लहर ऐलेन को भी आसमान में उछाल देती हैं।

क्या ऐलेन नीचे गिरने पर टुकड़े-टुकड़े होकर मर जायेगा? क्या यह उसका अन्त है? तभी नीचे गिरने से कुछ पल पहले ही उसे एक बाज अपनी ओर आता दीखता है।
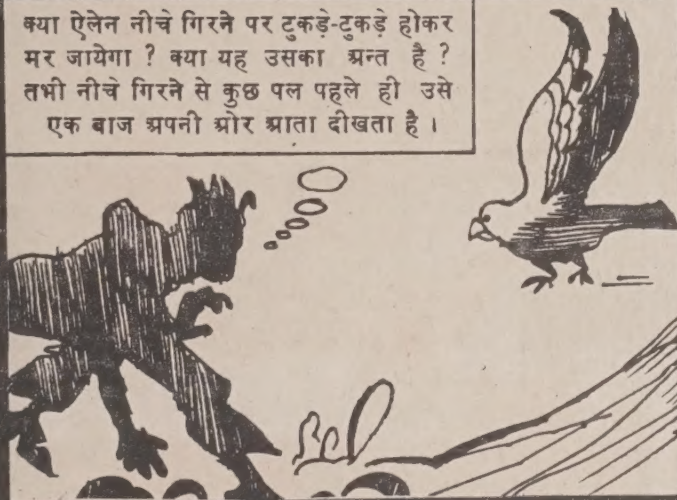
शऽऽ। थोड़ा सा और नजदीक आजा प्यारे—

शाबाश'''थोड़ा और
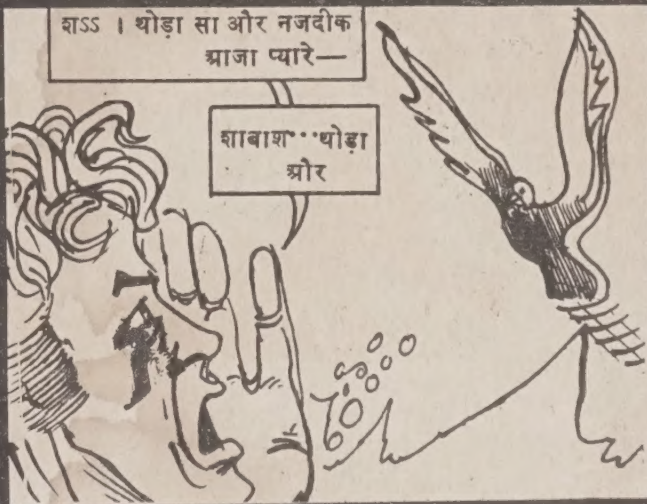
ऐलेन के शरीर में बाज की उड़ने की शक्ति प्रवेश करने लगती है।

अगर यह बाज न आया होता तो मैं गिरकर मर गया होता। अब मैं बाज की तरह उड़ सकता हूं। उस वैज्ञानिक से कल निबटूंगा। आज तो बचने की खुशी में काके के होटल पर तन्दूरी मुर्गा और रूमाली रोटी खाऊंगा।

शेष पृष्ठ ३० पर

पिछले दिनों एक फिल्म की शूटिंग में भाग लेने के लिए मोटू, डा० झटका और चेला राम गोआ गये तो उनसे जलने वाला घसीटा राम भी उनके पीछे-पीछे था और उन्हें किसी प्रकार समुद्र में धक्का देने की योजनायें बना रहा था। वहीं नाग द्वीप से आये दो नरभक्षी घूम रहे थे, जो नाग देवता की बली चढ़ाने के लिए तीन आदमियों को पकड़ने की ताक में थे। उनके हाथ जो पहला आदमी आया, वह था घसीटा राम। पर घसीटा राम ने नरभक्षियों को ऐसी उल्टी पट्टी पढ़ाई कि उन्हें अपना मित्र बना लिया और विश्वास दिलाया कि वह तीन आदमियों को एक साथ पकड़ कर कुर्बानी का बकरा बनाने के लिए उनके हवाले कर देगा।

घसीटा राम ने नाग द्वीप के जंगली लोगों से उनकी नाव ली और एक बड़ी फिल्म में काम दिलाने का झांसा देकर वह मोटू, डा० झटका और चेला राम को लेकर नाग द्वीप पहुंच गया। रात होने पर उन्हें एक जंगल में बसेरा करना पड़ा और घसीटा राम जंगली लोगों से सम्पर्क करने के लिए वहां से खिसक गया।

सुबह आँख खुलीं तो घसीटा राम को अपने साथ न पाकर सबको आश्चर्य हुआ। नागद्वीप के खतरनाक पहाड़ों पर चढ़ते वे एक पुराने किले के मन्दिर में पहुंचे तो वहां नाग देवता की एक बड़ी मूर्ति के सामने हीरों का बहुत बड़ा खजाना देखकर दंग रह गये। तभी वहां घसीटा राम अपने जंगली मित्रों के साथ आ गया। अपनी चालाकी से वह अब तक उनका सरदार बन चुका था। मोटू और उसके साथियों पर अब यह राज खुला था कि घसीटा राम उन्हें फिल्म में काम दिलाने का झांसा देकर नरभक्षियों के चंगुल में फंसा लाया है।

मोटू और डाक्टर झटका को जंगली लोगों ने पकड़ लिया। पर चेलाराम उनके चंगुल से निकल भागा। इस पर भी जंगली लोग अब भी उसकी नाव का पीछा कर रहे थे।

उस समय समुद्र में जबरदस्त तूफान था। चेलाराम के सामने आगे भी मौत थी और पीछे भी मौत। पर वह पीछे की परवाह किये बिना अपनी नाव को तेजी से आगे बढ़ाये लिए जा रहा था।

और जंगली लोग तूफान में और आगे बढ़ने की बजाये दूर से ही चेला राम को समाप्त करना चाहते थे।

तभी एक तीर चेलाराम की बांह पर लगा…

…और वह घायल होकर नाव में लुढ़क गया।

जंगली लोगों ने चेलाराम को तीर खाकर गिरते देखा था। वे खुश थे अब उनके लिए तूफान में और आगे बढ़ना बेकार था।
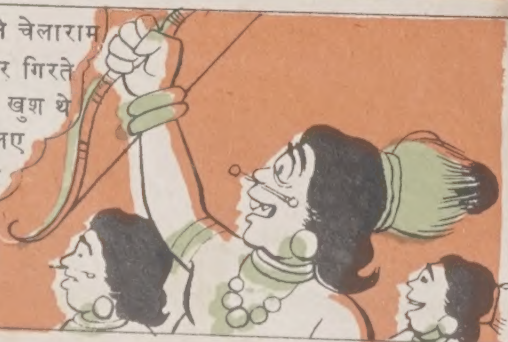
चेलाराम अब बेहोश था। उसकी नाव अब लहरों के बहाव और हवा के झोंकों के साथ अपनी मर्जी से किसी भी ओर बही जा रही थी।

कब दिन ढला ? कब रात हुई...?
फिर कब दिन निकला, चेलाराम को इसकी कोई सुध नहीं थी। और उसकी किश्ती बहती हुई जाने कहां से निकल गई थी ?
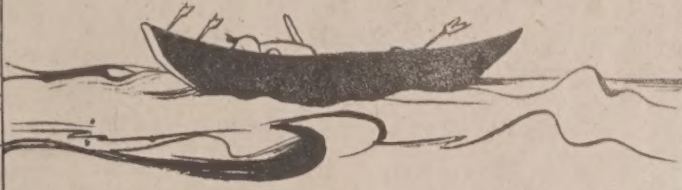
वहीं एक बड़ा जहाज शायद अपने लम्बे सफर पर जा रहा था।
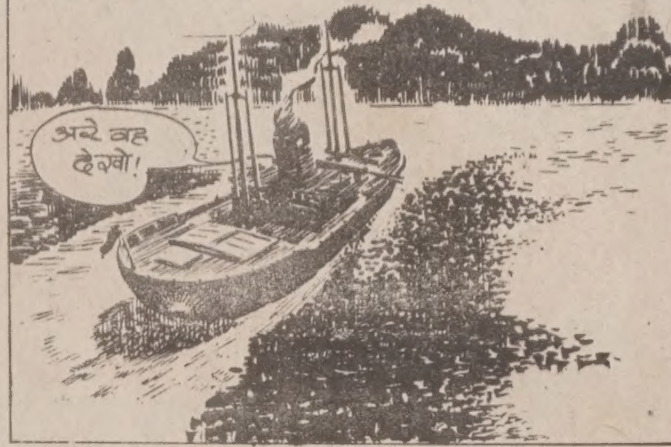
जहाज के कर्मचारियों ने दूरबीन की सहायता से एक नाव समुद्र की लहरों पर तैरती देखी तो चौंक गये।

और उन्होंने सहायता के लिए अपनी नाव समुद्र में उतार दी।
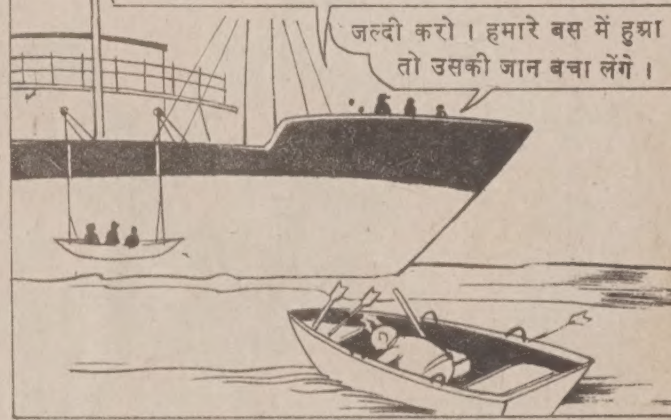
और इस प्रकार चेलाराम अब जहाज में पहुंच गया था।

जिन्दा है। अभी सांस ले रहा है।
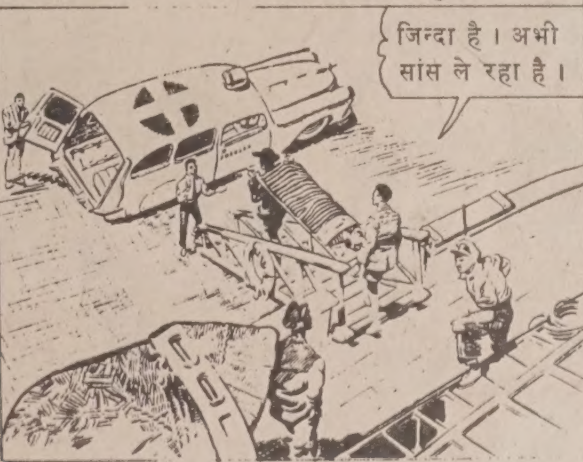
होश में आयेगा तो पता लगेगा कि इसके साथ क्या दुर्घटना हुई है।
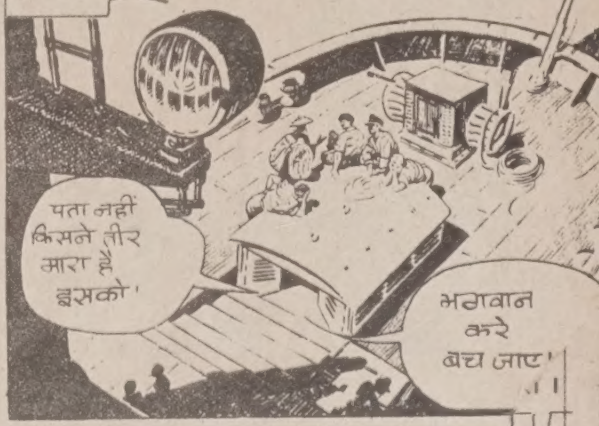
जहाज के हस्पताल में चेलाराम की मरहम-पट्टी की गई।

पर अभी उसे होश नहीं आया था।

उसके ख्यालों में उन सब घटनाओं की परछाईयां घूम रही थीं जिनसे गुजर कर वह यहाँ तक पहुंचा था ।

और जब उसे कुछ होश आया तो वह सपने की सी हालत में बड़बड़ा रहा था ।
मन्दिर के खजाने में हीरे । बहुत सारे

हीरे ही हीरे···वह मार देंगे···वह मोटू और डाक्टर झटका को मार देंगे ।
हीरे बता रहा है किसी खजाने में । शायद दिमाग खराब हो गया है इसका ।
उस जहाज में स्मगलरों का एक गिरोह भी सफर कर रहा था ।

घसीटाराम हीरों का लालची है । वह मोटू-पतलू को मरवा देगा
यह पागल नहीं हुआ है । तुम पागल हुए हो । याद नहीं, पिछले दिनों एक नक्शा हमारे हाथ आया था । जिससे पता चलता था कि यहाँ कहीं एक अँजाना द्वीप है जिसकी समुद्री गुफाओं के दरवाजे आज तक किसी को पता नहीं लग सके हैं ।
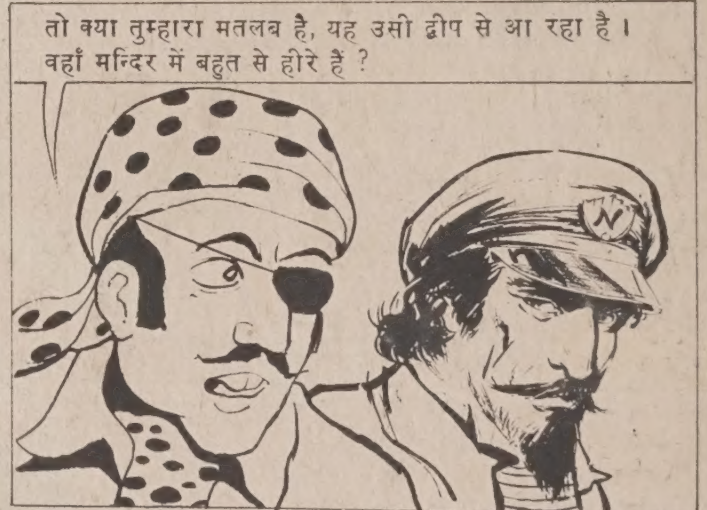
तो क्या तुम्हारा मतलब है, यह उसी द्वीप से आ रहा है । वहाँ मन्दिर में बहुत से हीरे हैं ?

तभी उस केबिन में जहाज का कप्तान आ गया ।
जिस घायल को बचाया था, क्या उसे होश आ गया ?
छ होश आया है । पर ऐसे बड़बड़ा रहा है, जैसे हो गया है ।

कोई बात नहीं, तुम इसकी देख-रेख करते रहो ।
यस सर । आप बिलकुल चिन्ता न करें ।

कैप्टिन के जाने के बाद स्मगलरों ने आपस में मिस्कोट शुरू कर दी।
अगर इसे हीरों के किसी भी प्रकार के खजाने का पता है तो होश आने से पहले ही इसे यहां से ले उड़ो।
दूर-दूर तक कोई नहीं है। इसे कमर पर लादो और चलते बनो।
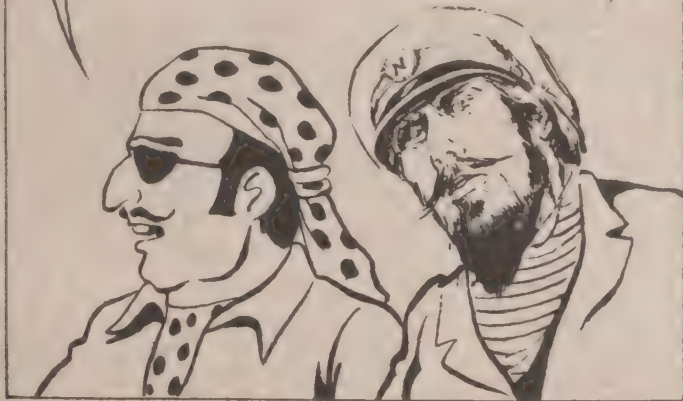
चादर डाल दो इस मुर्दे के ऊपर।
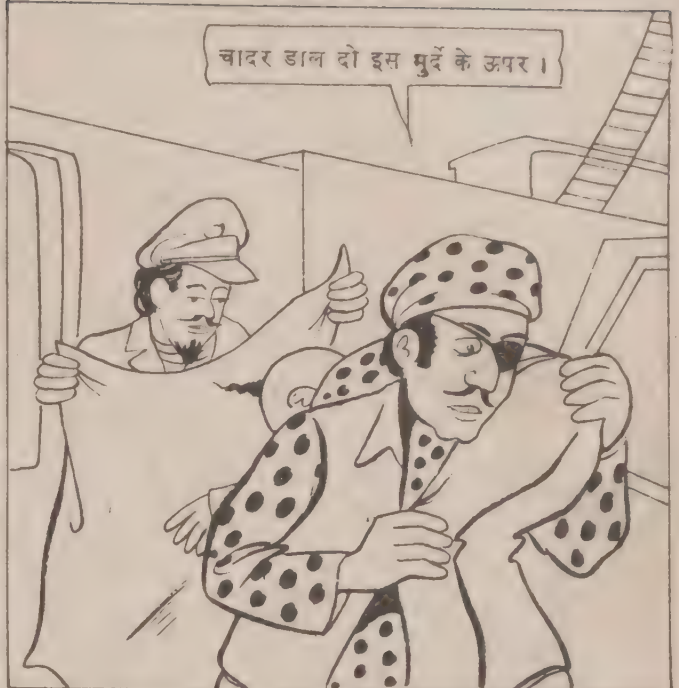
यह क्या ले जा रहे हो डेविड ?
मैले कपड़े हैं। धोने के लिए ले जा रहे हैं।

अब जब तक इसे पूरी तरह होश न आ जाए, यह हमारी कैद में रहेगा।
चलो अब इसके डूब मरने की कहानी मशहूर कर दो।
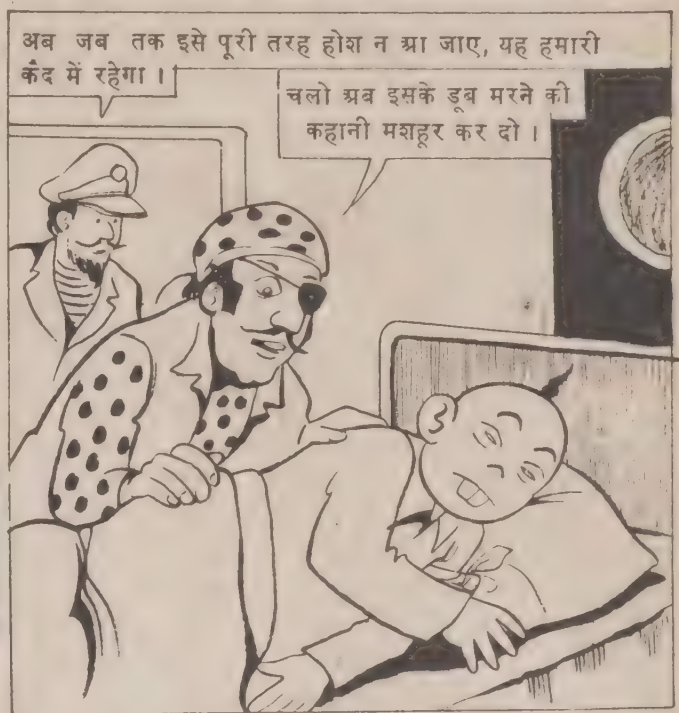
चेलाराम को अपने केबिन में बन्द करके वे फिर जहाज के अस्पताल के सामने आ गये। वहां पहले ही घायल और बेहोश आदमी के गुम होने पर खलबली मची हुई थी।
तुम अस्पताल में उसकी देख-भाल कर रहे थे। आखिर वह गया कहां ?
मैं जरा सिगरेट लेने गया था। वापस आया तो वह गायब था।

वह पागल था ? मैंने उसे बड़बड़ाते सुना था। वह वास्तव में पागल हो गया था। थोड़ी देर पहले अपने बिस्तर से उठा और जैसे ही मैं उसे पकड़ने लगा। उसने समुद्र में छलांग लगा दी।
समुद्र में छलांग लगा दी ? मतलब है आत्महत्या कर ली ? बहुत बुरा हुआ। उसे तीर से किसने घायल किया था, यह भी पता नहीं चल सका।
चलो, जो होना था सो हो गया।
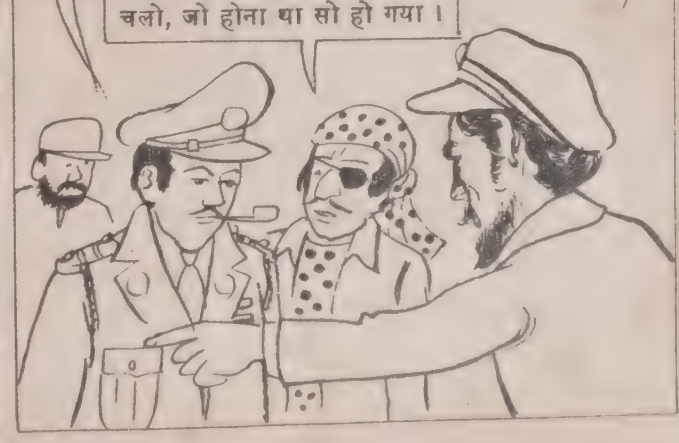
तुम सबको एक्शन के लिए तैयार रहना चाहिए। जैसे ही उससे उस जगह का पता लगेगा हम अपनी किश्ती समुद्र में उतार के उसकी खोज में निकल पड़ेंगे।

वह सामने जो पहाड़ियां हैं, वही नाग द्वीप है।

हम एक समुद्री गुफा के रास्ते से वहाँ गये थे।

वह रास्ता हम ढूंढ़ लेंगे।

वहां जाना अपनी मौत के मुंह में जाना है। वहां के जंगली लोगों के भालों का निशाना अचूक है।

जहाज पर स्मगलरों के गैंग के बहुत से साथी थे। उन्हें एक स्टीमर में बैठकर स्टीमर समुद्र में उतरने में जरा देर नहीं लगी। चेलाराम उनके साथ था। जहाज का एक और कर्मचारी उनकी जासूसी कर रहा था। और वह भी स्मगलरों की योजनाओं को भांप कर स्टीमर में आ छुपा था।

अब तक चेलाराम आने वाले खतरे को भांप चुका था। वह जिन्हें अपना मित्र और सहायक समझ कर नाग द्वीप ले जा रहा था वह मोटू और डा० झटका को बचाने की बात करने की बजाए केवल खजाने की बात कर रहे थे।

नाग द्वीप के तट पर पहुंच कर।

चेलाराम अब एक स्मगलर के साथ तट पर रह गया था। और बाकी तीन स्मगलर नागद्वीप के मन्दिर की ओर चल दिये थे।

चेलाराम के बताए रास्ते पर आगे बढ़ते हुए ......

नागद्वीप के मन्दिर के पास पहुँचना स्मगलरों के लिये कठिन नहीं था।
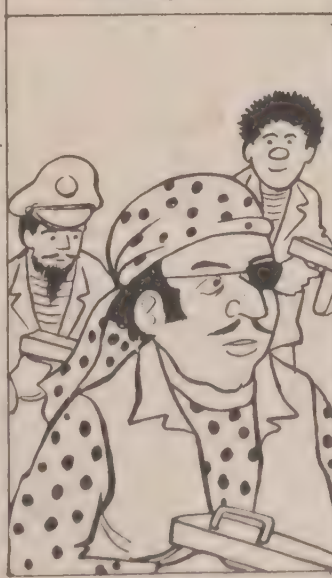
और अब वे नागद्वीप के मन्दिर के दरवाजे पर पहुँच गये थे।

अपनी तो किस्मत ही खुल गई।

स्मगलरों ने हड़बड़ा कर गोलियां चलाईं तो वह नाग देवता की—
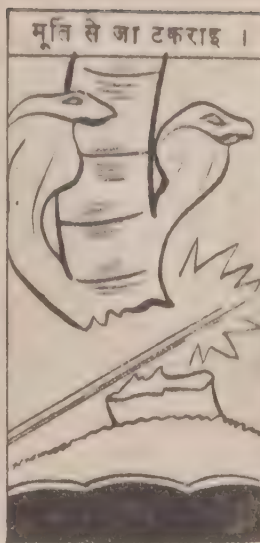
मूर्ति से जा टकराई ।
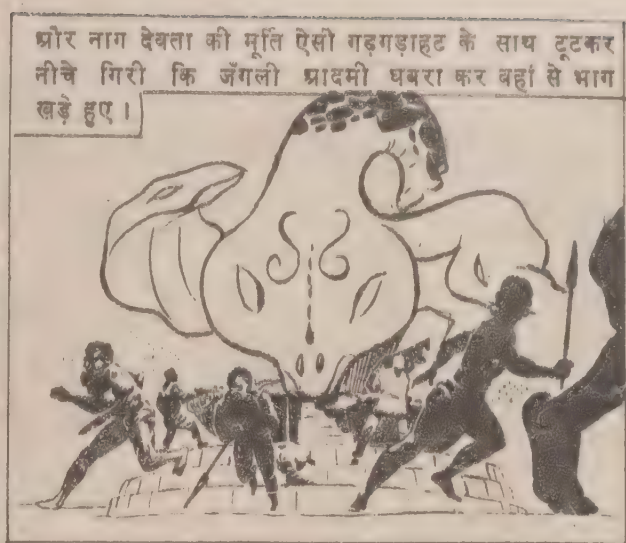
और नाग देवता की मूर्ति ऐसी गड़गड़ाहट के साथ टूटकर नीचे गिरी कि जँगली आदमी घबरा कर वहां से भाग खड़े हुए ।

दूसरी ओर चेलाराम को कैदी बनाने वाला स्मगलर अपने पीछे की जासूसी से बेखबर था ।
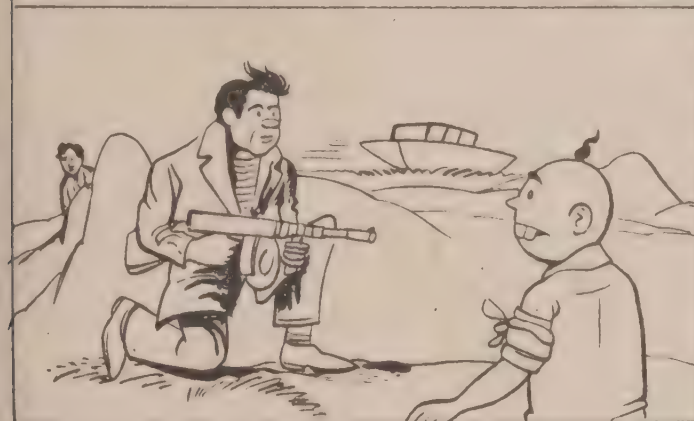
उसे अपने पीछे से होने वाले हमले की मोहलत नहीं मिली थी ।

हमला करने वाले जासूस ने अब स्मगलर को पूरी तरह काबू कर लिया था ।

चेलाराम की समझ में नहीं आ रहा था कि उसका यह मददगार कौन है और कहां से आया है ।

स्मगलर पूरी ताकत से करवट लेकर एक बार ऊपर तो आ गया था ।

पर जासूस के मुक्के ने उसका पूरी तरह कबाड़ा कर दिया था ।

अब वह मिट्टी के ढेर की तरह लुढ़क गया था और जासूस का आखरी वार रोकना उसके लिए असम्भव था ।

बाकी आगामी अंक में ।

रिजवी साहब बार-बार मेज पर हाथ मारकर चिल्ला रहे थे—

'सायलेंट···प्लीज···सायलेंट···।'

लेकिन उनकी कौन सुनता, क्लास में यह अफराफरी उस समय तक रही जब तक कि मेंढक बाहर नहीं निकल गया···फिर जब लड़के और लड़कियां अपनी सीटों पर बैठ गए, तो रिजवी साहब ने सब को क्रोध भरी दृष्टि से देखते हुए पूछा—

'यह किसकी बदतमीजी थी ?'

'सर···' हीरो उठकर हांफता हुआ [illegible] 'मुझे यह मजाक बिल्कुल पसंद नहीं है···सर [illegible] डरते हैं···लेकिन मेंढक [illegible] हम निकलने लगता है···अब [illegible] हार्ट फेल हो जाता तो [illegible] का क्या बिगड़ना ?'

हीरो ने पद्मिनी की ओर संकेत किया और पद्मिनी बुरी तरह बौखला गई। रिजवी साहब ने पद्मिनी को घूरकर देखा और बोले—

'तो यह आपकी हरकत थी ?'

'ओ···नो सर···' पद्मिनी खड़ी होकर बौखलाती हुई बोली, 'यह झूठ है···यह हरकत स्वयं इन्हीं ने की है···और मेरा नाम लगा रहे हैं।'

'सर···' हीरो जल्दी से डैस्क के पीछे निकलकर मेज के पास जाकर बोला, 'जरा मेरे दिल की धड़कनें सुनिए···मैं सपने में भी मेंढक देखकर चीख मारकर उठ बैठता हूं···और यह नाम ले रही हैं, आपको विश्वास न हो तो मेरे [illegible] से मालूम कर लीजिए···सर मैं मेंढक से बहुत डरता हूं···अभी मेरा हार्ट फेल हो जाता तो मैं तो कहीं का न रहता।'

बोलते-बोलते हीरो की आवाज भर्रा गई और आंखें भी भीग गईं। पद्मिनी गुस्से से थर-थर कांप रही थी। रिजवी साहब ने पद्मिनी को घूरकर कहा—

'मिस पद्मिनी ? आप शरारत में इतनी [illegible] एटिकेट हो जाएंगी···यह हमने नहीं सोचा था···आप फौरन क्लास-रूम से निकल जाइये और कम-से-कम एक, [illegible] जाइये।'

'मगर सर···यह झूठ है।'

'शटअप एण्ड गैट आऊट।'

पद्मिनी ने अपनी पुस्तकें संभालीं और क्रोध भरी नजरों से हीरो को देखती हुई क्लास से बाहर निकल गई। हीरो के होंठों पर दबी विजयी-सी मुस्कराहट थी। पद्मिनी का खून गुस्से से खौल रहा था, उसके होंठ दृढ़ता से भिंचे हुए थे···आँखों से चिनगारियां निकल रही थीं। बाहर आकर पैर पटकती हुई वह सीधी बाग में चली आई और पुस्तकें घास पर फेंक कर गुस्से और बेचैनी में टहलने लगी। उस के मस्तिष्क में लावा सा खौल

रहा था···हीरो की सूरत तक से उसे घृणा हो रही थी···वह उससे इस अपमान का बदला लेना चाहती थी···।

पीरियड समाप्त हुआ तो सब लड़कियों ने उसे घेर लिया···।

'हमने तो पहले ही कहा था कि तू उस से जीत नहीं सकती।'

'अरे···वह तो आफत का परकाला है।'

'आज तो सारी नारी जाति की नाक नीचे गिरा दी।'

'अब तो हम लोग उनकी ओर नजरें उठाकर भी नहीं देख सकते।'

पद्मिनी गुस्से में भरी सारी लड़कियों की टिप्पणियां सुनती रही···फिर उसने सब पर क्रोधमयी दृष्टि डाली और अपनी पुस्तकें उठाकर सीधी अपनी कार की ओर चली गई। थोड़ी देर में उसकी कार कालिज के फाटक से निकालकर तेजी से सड़क पर दौड़ रही थी···उसने कभी अपने जीवन में इतनी बड़ी हार नहीं खाई थी···।

□ 'व्हाट···?' प्रिंसिपल ने आश्चर्य से आंखें फाड़कर कहा, 'यह तुम क्या कह रही हो ?'

'सच कह रही हूं सर···' पद्मिनी धीरे से सिसककर बोली, 'यह देखिए···मेरी साड़ी दो जगह से मसक गई है···और यह देखिये मेरी बांहें लाल हो रही हैं···।'

'लेकिन कहां पर ?'

'सर···मैं गार्डन के कुंज में अकेली बैठी अपने लैक्चर के नोट ठीक कर रही थी···वहां बिल्कुल एकांत था सर···बस वहीं वह आ धमका···वह समझा था कि मैं कोई ऐसी वैसी लड़की हूं···सर, क्या इस कालिज में अब शरीफ लड़कियों की इज्जत का भी कोई मूल्य नहीं।'

प्रिंसिपल की आंखें गुस्से से लाल हो गईं···उन्होंने घंटी बजाकर चपरासी को बुलाया और बोले—

'रिजवी साहब की क्लास में से रोल नम्बर फोर फिफ्टी वन को बुलाकर लाओ।'

चपरासी चला गया और प्रिंसिपल ने पद्मिनी को सांत्वना देते हुए कहा—

'बैठ जाओ बेटी···हम उसे ऐसी सजा देंगे कि जीवन भर याद रखेगा···हम उसे पांच साल के लिए रेस्टीकेट कर देंगे···।'

पद्मिनी सिसकती हुई बैठ गई···थोड़ी देर बाद हीरो आज्ञा लेकर प्रिंसिपल के कमरे में प्रविष्ट हुआ और पद्मिनी को वहां देखकर ठिठक गया। प्रिंसिपल का चेहरा गुस्से से लाल हो गया था। हीरो के किसी आशंका से कान खड़े हो गए थे···हीरो ने भोलेपन से पूछा—

'सर···आपने मुझे बुलाया था ?'

'हां···।' प्रिंसिपल क्रोध से बोले।

'आज तुमने वह हरकत की है कि हमारे कालिज का नाम तक मिट्टी में मिला दिया है।'

'व्हाट सर···?'

'हम सपने में भी नहीं सोच सकते थे कि तुम इतने नीच निकलोगे···तुम दूसरे कालिज से जब ट्रांसफर होकर यहां आए थे तो हमने तुम्हारा रिकार्ड कार्ड देखा था तो सोचा था कि तुम हमारे कालिज का नाम उज्ज्वल करोगे, लेकिन तुमने यहां आकर अपना असली रूप दिखा दिया।'

'हीरो' सन्नाटे में खड़ा हुआ था···प्रिंसिपल क्रोधित स्वर में कह रहे थे—

'तुम शायद इस बरस हमारे कालिज में

टॉप करते···तुम्हें कोई बहुत बड़ी गवर्नमेण्ट की नौकरी भी मिल सकती थी···किसी बैंक में मैनेजर भी लग सकते थे···लेकिन तुम्हारा कैरियर सदा के लिए नष्ट हो गया···वह भी तुम्हारी जरा सी गलती से···तुम्हारी कामुकता के कारण···हम तुम्हें पूरे पांच बरस के लिए रेस्टीकेट करेंगे।'

हीरो का पूरा बदन हिलकर रह गया···फिर उसने अपने आपको संभाला और हाथ जोड़कर भर्राई हुई आवाज में बोला—

सर···मैं अपनी भूल को मन से स्वीकार करता हूं और उसके लिए लज्जित हूं···लेकिन सर···मेरे लिए यह सजा बहुत बड़ी है।'

पद्मिनी ने चौंककर हीरो की ओर देखा और हीरो फिर बोला—

'सर···कभी आप भी मेरी आयु के रहे होंगे···इस आयु के जोश और उमंगों का अनुमान तो आपको भी होगा···सर···अब आप ही सोचिए सर, इतनी सुन्दर लड़की को देखकर तो देवताओं की साधना भी भंग हो जाती है···मैं तो एक साधारण इन्सान हूं···?'

'क्या बकते हो ?' प्रिंसिपल गुर्राए, 'तुम अशिष्ट भी हो।'

'सर, मैं तो अपने अपराध को स्वीकार कर रहा हूं।' हीरो ने भर्राई हुई आवाज में कहा, 'सचमुच मैं बहुत बड़ी सजा का पात्र हूं क्योंकि मैंने एक इज्जतदार शरीफ घराने की भोली-भाली लड़की की इज्जत लूट ली है।'

पद्मिनी बौखलाकर खड़ी होती हुई बोली—

'ओ नो सर···मै···मै अपने आपको बचाने में सफल हो गई थी।'

हीरो ने बड़े भोलेपन से पद्मिनी की ओर देखा और हाथ जोड़कर नम्रता से बोला—

'देवीजी···जो होना था वह हो चुका···अब जब प्रिंसिपल साहब इस बात के गवाह बन चुके हैं और यह बात फैल जाने पर आपके घराने की नाक कट जाने की भी आशंका है तो क्यों फिर बात को प्रिंसिपल साहब से छुपा रही हैं आप ?'

'स···स···सर।' पद्मिनी बौखलाई, 'मैं सच कहती हूं···मैं···मैं···बच गई थी।'

'सर···।' हीरो प्रिंसिपल के सामने हाथ जोड़कर बोला, 'पद्मिनी जी ! जिस पाप को छुपाने का प्रयत्न कर रही हैं···वह तो कस्तूरी के समान है···आज नहीं तो दो-चार महीने बाद इसकी सुगन्ध फैल सकती है···सर, मैं स्वयं स्वीकार करता हूं कि यह पाप मुझसे हुआ···मिस पद्मिनी को अकेले देखकर मैं अपने आप पर नियन्त्रण न रख सका, मैंने इन्हें अकेला देखकर इनका मुंह दबा दिया, बेचारी आवाज भी न निकाल सकीं, और सर···सतीत्व लुट जाने के बाद कोई लड़की शोर थोड़े ही मचा सकती है···उससे पहले ही वह अपनी इज्जत बचाने के लिए चीख चिल्ला सकती है।'

'ओ···नो सर···।' पद्मिनी हांपती हुई बोली, 'यह झूठ बोल रहे हैं।'

'सर···अगर मैं झूठ बोल रहा हूं तो इनसे पूछिए इनके चीखने चिल्लाने का कोई गवाह है ?'

'प्रिंसिपल पागलों की भांति कभी हीरो को देखते कभी पद्मिनी को। पद्मिनी इतनी बौखला गई थी कि उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या बोले, उसका बदन थर-थर कांप रहा था। प्रिंसिपल ने संदेह-भरी दृष्टि से पद्मिनी की ओर देखा और बोले—

'अब क्या उत्तर है तुम्हारा ?'

'म···स···सर···म···म···में···?'

'देखो बेटी···अगर तुम्हारे चीखने चिल्लाने का गवाह नहीं है तब तो मैं यही समझूंगा कि या तो तुमने इस लड़के पर झूठा आरोप लगाया है और या फिर यह लड़का सच कह रहा है।'

'वह···वह···वह···सर···।'

'देखो बेटी···मुझे साफ-साफ बता दो अगर कोई ऐसी वैसी बात है तो वह इस चारदीवारी से बाहर नहीं जाएगी।'

'सर···'हीरो भारी आवाज में बोला, 'मैं तो अपने पाप के प्रायश्चित के लिए इन देवीजी से शादी भी करने को तैयार हूं।'

'शादी···!' पद्मिनी उछलकर बोली, 'और तुमसे ? मैं तुमसे घृणा करती हूं मैं···तुम्हारी सूरत पर थूकना भी पसन्द नहीं करूंगी।'

'तो फिर साफ-साफ बताओ।' प्रिंसिपल गुस्से से झल्लाकर बोले, 'हम सच्ची बात जानना चाहते हैं ताकि तुम दोनों में से किसी के साथ भी अन्याय न हो सके।'

'सर···मैंने अपने आपको बचा लिया था···लेकिन चिल्लाई इसलिए नहीं थी कि मुझे अपनी इज्जत से बढ़कर अपने खानदान की इज्जत का ध्यान था···मेरा गवाह वहां के पेड़ और पौधों के सिवाय और कोई नहीं···मैंने आपको पिता के स्थान पर समझकर आपसे शिकायत की लेकिन आप उल्टा मुझी पर संदेह करने लगे हैं···क्या कोई लड़की इस प्रकार अपनी इज्जत पर कीचड़ उछलने देगी ? सर, आप न्याय कीजिए या मत कीजिए···मैं इन महाशय से अपना हिसाब स्वयं बराबर कर लूंगी।'

यह कहकर पद्मिनी तेजी से जाने के लिए मुड़ी ही थी कि प्रिंसिपल ने पुकार कर कहा—

'ठहरो पद्मिनी···।'

पद्मिनी रुक गई और पलटकर मेज के पास आ गई। प्रिंसिपल ने बारी-बारी दोनों को देखा···अब हीरो का रंग उड़ने लगा था क्योंकि उसे अनुभव होने लगा था कि पद्मिनी का दाव चल गया है···दोनों को घूरने के बाद प्रिंसिपल ने हीरो पर आंखें जमाते हुए क्रोधित स्वर में कहा—

'कोई भी शरीफ लड़की अपनी इज्जत पर ऐसा धब्बा पसंद नहीं करेगी···तुम अगर कह रहे हो कि तुमने इस निर्दोष लड़की की

शेष पृष्ठ २८ पर

अगर मनुष्यों के नाक की जगह सूंड होती

सोचिये, अगर मनुष्यों के भी नाक की जगह हाथी की तरह सूंड होती तो क्या होता? उसके दैनिक जीवन में क्या क्या उपयोग होते या वह क्या नयी समस्यायें पैदा करता? एक झलकी–

प्रेमी गले में हाथ डालकर चलने की बजाय एक दूसरे के गले में सूंड डाल कर चलते।

धोबी के पास से कपड़े प्रेस करके हैंगरों पर टांग कर लाना सुगम होता। नाक पर कपड़े भी सुखाये जा सकते थे।

नाक इतनी लम्बी होती उसमें से माल भी उसी क्वांटिटी में निकलता। जुकाम होने, नाक बहने पर रुमाल से काम न चलता। पूरे चद्दर की जरूरत पड़ती।

काम काजी व्यक्तियों के लिए सूंड वरदान होता। सूंड से टेलीफोन का रिसीवर पकड़ा और दोनों हाथों से बात चीत के साथ काम भी जारी रहता।

पतियों की जरूर मुसीबत होती। आज के नाक में नथनी से प्राण चल जाता है। सूंड होती तो नारियों को नाक पर इतने गहने पहनने का [illegible] मिलता [illegible] देख पतियों को [illegible] आ जाते।

किसी निर्जन टापू पर फंस गये तो भूखे न मरते। सूंड को काट कर ब्रेड के बीच रख सैंडविच बना कर खाया जा सकता था जैसे ककड़ी को काट कर सैंडविच बनाते हैं।

बसों में सफर करना आसान होता। हाथों को आराम मिलता।

हां नाक की जगह सूंड होने का नुकसान यह होता कि रात को सोना मुश्किल होता। खर्राटों की आवाजें इतनी जोर से होतीं जैसे जेट इंजन चालू हो गये हों।

प्रेमिकायें ऊपरी मंजिली पर रहती हों तो प्रेमियों के लिए सूंड बहुत सहायक सिद्ध होती। लेटर या प्रेजेन्ट वगैरह पहुंचाने में।
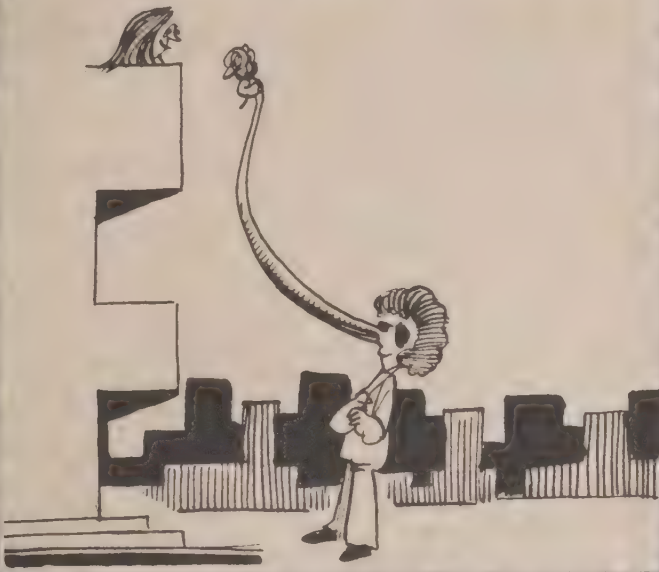
सूंड होने पर योगाभ्यासी शीर्षासन स्थान पर सूंडासन करते।
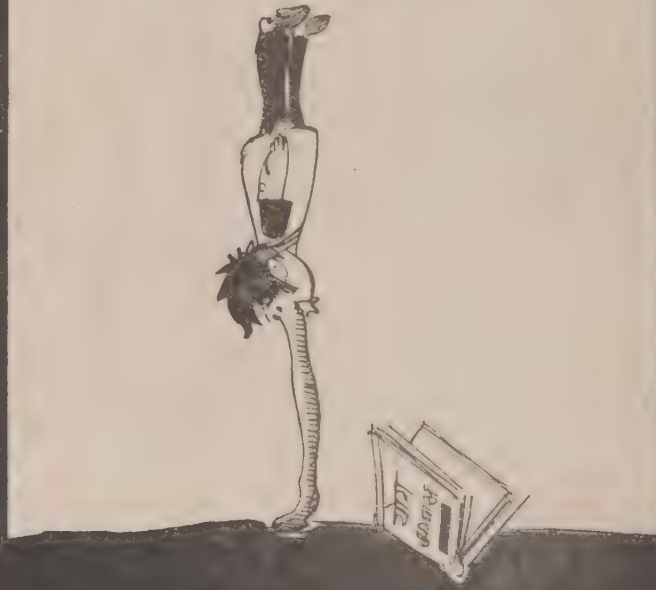
स्कूलों की कक्षाओं में अध्यापक प्रश्न पूछने के बाद कहते, 'जिनको उत्तर आता है अपने-अपने सूंड ऊपर उठा लो।
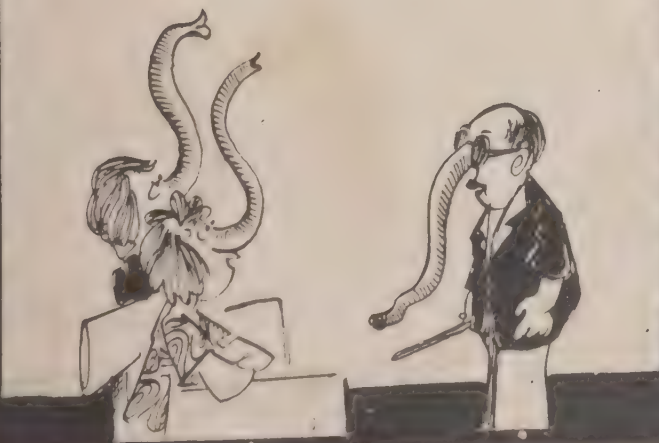
बंद नाक खोलने के लिए विक्स वाले इनहेलर बनाते हैं। सूंड जैसी लम्बी चीज खोलने के लिए उन्हें मिसायल की साइज का इनहेलर बनाना पड़ता।

फैण्टम - जंगल शहर

बच
गया···
वह पीछे
रह गया।
बहुत तेज है।

आह !

डेव का पुलिस बैज···
तो तुमने डेव को
लूटा था
नहीं नहीं
मैंने कुछ
नहीं किया
तुम्हें गलत
फ़हमी है।

यह रहा तुम्हारा गिरोह···
तुम्हारे इन्तजार में, बताओ
किसकी मदद से तुमने डेव
को लूटा।

वह
रहा !
FALK
&
BARRY
12/7

ऐ लड़की ! इधर
आओ।

इसी लड़की ने मुझे फँसाने के
लिए गिरोह की मदद की···
यह भी चाल में शामिल थी···

इधर
रुको।

मैंने कुछ नहीं
किया, मुझे
कुछ नहीं
पता···
FALK
&
BARRY
12/8
इसका निर्णय
पुलिस करेगी।

मैं किस
तलाश में
था···
डेव के
बैज की···।
सच मैं, मैंने
कुछ नहीं
किया।
मैं तुम्हें इन दोनों के साथ ले जाऊँगा।

तुम ही वो फन्दा हो जिससे ये लोग मुझे जाल में फंसाना
चाहते थे इसीलिए तुम भी इतनी ही गुनाहगार हो
जितने कि ये
बदमाश !
!!
FALK
&
BARRY
12/9

बड़े शहर में उन्होंने सब कुछ देखा है।
??

यह कैसा लगा ?
क्या कोई इश्तहार है ?

?
POLICE

रात को पार्क में…लड़ाई के बाद चुप्पी पड़ी है।

!
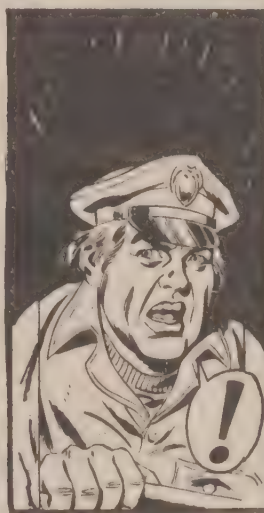
बचाओ

!!!!
टेलीफोन पुलिस

वही ई ई ई

?????
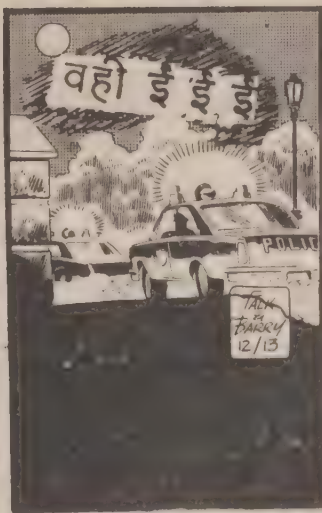
डार्लिंग…क्या तुम हो ?
हां
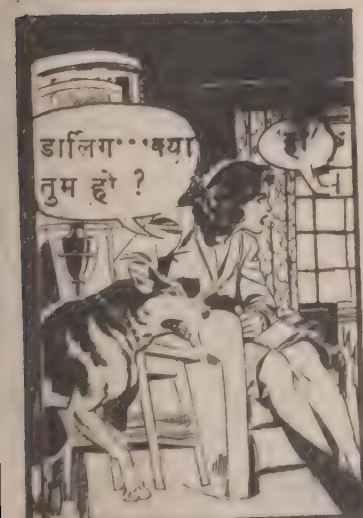
तुम थके हो…अरे खून भी
हा, ऊपरी घाव है।

हां ! मुझे डेव का बैज मिल गया है।
क्या हुआ ?
कुछ खास नहीं कल अखबार में पढ लेना।

झूठ बोल रही है···

मैंने इसे पहले कभी भी नहीं देखा !

टाइम्स

पार्क में कत्ले आम । नकाब पोश ने एक दर्जन गुण्डों को पीटा और गायब···

नये पाठकों के लिए

चार सौ वर्ष पहले समुद्री लुटेरों से बच-कर एक आदमी बंगाला बीच पर

लहरों द्वारा फेंका गया

मैं अपनी पूरी जिन्दगी अन्याय से लड़ाई करूंगा, चोरों और डाकुओं को समाप्त करूंगा । मेरे बाद मेरे पुत्र भी मेरा अनुसरण करेंगे ।

अपने पिता की खोपड़ी पर प्रथम फैंण्टम की शपथ ।

चलता फिरता भूत···

···जो कभी मरता नहीं ।

अन्याय से हर जगह लड़ने वाला···हमारा २१ वां फैंण्टम जो अकेला काम करता है

पहले फैंण्टम ने कोलम्बस की पोती से शादी की ।

तीसरे फैंण्टम ने शेक्सपीयर की भांजी से शादी की थी ।

पर इसका परिवार कहां-कहां है ?

शदियों से फैंण्टमों ने देश-विदेशों में अपनी स्त्रियां चुनीं, जिन्होंने फैंण्टम खानदान को आगे बढ़ाया ।

क्रमश :

सुनील गावस्कर का एटम बम

मद्रास में २१ जनवरी १९८० को पाकिस्तान के विरुद्ध पांचवा टैस्ट मैच भारत ने जीतकर भारत-पाक १९७९-८०कीशृंखला जीत ली। मैच जीतने के तुरन्त बाद भारतीय कप्तान सुनील गावस्कर ने स्टेडियम में खुशी में छूट रहे पटाखों की पृष्ठभूमि में अपने एटम बम का धमाका किया। उन्होंने उसी दम से भारतीय कप्तानी मे त्याग पत्र दे दिया और घोषणा की कि वे इसी वर्ष के वेस्ट इंडीज दौरे के लिए उपलब्ध नहीं होंगे। अधिकारीगण तथा क्रिकेट प्रेमी सन्न रह गये। क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड के पांव के नीचे से जैसे किसी ने जमीन खिसका दी हो क्योंकि मैच या सीरिज हारने पर क्रिकेट बोर्ड कप्तानों की बलि तो देता आ रहा था लेकिन पहली बार कप्तान ने ठीक उस समय त्याग पत्र दे दिया जब वह सफलताओं के अपूर्व शिखर पर था। इसके पीछे रहस्य क्या थे ?

यह सच है कि गावस्कर कभी बोर्ड अधिकारियों के चाहते नहीं रहे। अपनी पुस्तक व छपने वाले लेखों में वे अधिकारियों की टांग खींचते ही रहते हैं। अपनी पुस्तक 'सन्नी डेज' में गावस्कर ने चयनकर्ताओं को मूर्खों की टोली का खिताब दिया है। चाह कर भी अधिकारी गावस्कर का कुछ नहीं बिगाड़ पाये क्योंकि अपनी बल्लेबाजी के कारण निरन्तर गावस्कर ने सेंचुरियों तथा देश-विदेश व विश्व भर पर नये रिकार्ड स्थापित करने का सिलसिल जारी रखा और इस प्रकार महान खिलाड़ी के रूप में स्वयं को प्रतिष्ठापित किया कि अधिकारियों के लिए उनसे छेड़खानी करना आसान नहीं रहा। हालत सांप छछूदर की सी हो गयी जो न उगले बनता था और न निगले।

अधिकारियों ने अधिक से अधिक यह किया कि क्रिकेट खिलाड़ियों का पत्रिकाओं व समाचार पत्रों में लेख लिखने पर पाबन्दी लगा दी। जब यह हुआ तो गावस्कर की पत्नी ने लेख लिखना शुरू किया जिसमें अधिकारियों पर परोक्ष रूप से छींटाकसी होती थी। लोग यह भी कहने लगे कि पत्नी के नाम से गावस्कर खुद लिख रहा है। गावस्कर क्रिकेट खिलाड़ी संघ का भी अधिकारी है इसलिये क्रिकेट अधिकारियों से तनातनी बनी रहती है। पिछले वर्ष गावस्कर सहित कुछ क्रिकेटरों द्वारा पैकर सर्कस में भर्ती होने की इच्छा में भी काफी कटुता पैदा कर दी थी।

पिछले वर्ष इंग्लैंड के दौरे से पूर्व गावस्कर ने कुछ ऐसे ब्यान दिये कि कप्तानी वे नहीं करना चाहते तो अधिकारियों को फौरन वेंकट राघवन को कप्तान बनाने का मौका मिला। भारतीय टीम इंग्लैंड से पिटकर आई लेकिन इंग्लैंड में गावस्कर का प्रदर्शन सराहनीय रहा। हारकर अधिकारियों ने गावस्कर को आस्ट्रेलिया के विरुद्ध कप्तानी दी जो गावस्कर ने स्वीकार कर ली। अब अधिकारियों ने यह अफवाह उड़ाई कि गावस्कर केवल दूसरे दर्जे की टीमों (कालीचरण की वेस्टइन्डीज टीम व किमह्यूज की आस्ट्रेलियाई टीम) के विरुद्ध ही कप्तानी स्वीकार करता है जहां हार की नहीं केवल जीत की ही गुंजाइश रहती है। परन्तु यहां भी गावस्कर ने बाजी मार ली। पाकिस्तान जैसी सुदृढ़ टीम के विरुद्ध कप्तानी स्वीकार की और अपनी साधारण गेंद बाजी वाले आक्रमण (या यूं कहिये केवल कपिल देव के सहारे) की सूझबूझ से मोर्चे लगा कर पाकिस्तान को भारी पराजय दी।

काफी हद तक यदि निष्पक्ष रूप से देखा जाये तो गावस्कर का पक्ष ठीक है। गावस्कर का आरोप है कि क्रिकेट अधिकारी पैसा बटोरने की अंधी धुन में जरूरत से ज्यादा टैस्ट मैच खिलवा रहे हैं। यह आरोप सही है। और उन पैसों का अधिकारी क्या करते है ? नये स्टेडियम खड़े करने में खर्च करते हैं जबकि पहले से ही स्टेडियम मौजूद हैं। बम्बई में ब्रेबोर्न का विश्व विख्यात स्टेडियम था लेकिन अधिकारियों की सनक देखिये कि नया वानखेड़े स्टेडियम करोड़ों रुपये खर्च कर बनवाया गया। किसलिये ? आखिर एक शहर में एक समय में एक ही टैस्टमैच तो होगा। यहां तक कि इंग्लैंड जैसे क्रिकेट जन्मदाता और क्रिकेट व्यसनी देश में भी पिछले ५० वर्षों में कोई नया क्रिकेट स्टेडियम नहीं बना। वे पैसों का सदुपयोग खेल तथा खिलाड़ियों की उन्नति के लिए करते हैं। भारत जैसे गरीब देश में जहां पैसे और मैदानों की कमी के कारण जन साधारण के लोकप्रिय खेल फुटबाल, हॉकी, दौड़ व कुश्ती, कबड्डी व वॉलीबाल आदि दम तोड़ रहे हैं। वहां क्रिकेट के महंतों की झूठी शान बनाये रखने के लिए मैदानों और पैसों का महंगा मजाक अपराध नहीं तो और क्या है ? इन अनाप शनाप खर्चों के लिये पैसा बटोरने के लिये टैस्ट मैच आयोजित होते हैं। टैस्टों में टैस्ट क्रिकेटरों को खेलना पड़ता है।

इतने ज्यादा लगातार टैस्ट खेलने पर बड़े-बड़े खिलाड़ी भी फीके पड़ने लगते हैं उनकी खेल प्रतिभा दम तोड़ने लगती है इसी दर से टैस्ट मैच होते रहे तो कपिलदेव जैसा खिलाड़ी भी दो तीन वर्षों में ही थक जाएगा लगातार पैकर वर्ल्डसीरीज खेलने का परिणाम इमरान के रूप में हमारे सामने है, दो तीन ओवरों के बाद ही कमर जवाब दे जाती है। क्रिकेटरों को कोल्हू का बैल समझना उनके साथ अन्याय है। अब आप ही हिसाब लगाइये कि पिछले वर्ष भारतीय खिलाड़ियों ने २०-२१ टैस्ट खेले। विश्राम का दिन मिलाकर एक टैस्ट छः दिन का हुआ। टैस्ट से दो दिन पहले टैस्ट सेंटर पहुंचना पड़ता है और एक दिन अन्त में समारोहों में लग जाता है इससे पहले व बाद में चार पांच दिन सफर व सफर की तैयारियों में लग जाते हैं इस प्रकार एक टैस्टमैच एक खिलाड़ी के लिये १५ दिन का पड़ता है। इस प्रकार वर्ष के २०×१५ तीन सौ दिन टैस्टों में लग गये। इनमें से एक विदेशी देश का दौरा भी होता है जो एक डेढ़ महीना अतिरिक्त ले लेता है। वर्ष के तीन सौ पचास दिन क्रिकेट के हुये।

एक क्रिकेटर का भी परिवार है, मां है,

शेष पृष्ठ ३० पर

सिलबिल पिलपिल
सुनील गावस्कर के पीछे
ओ क्रिकेट के दीवानों, थमने, मद्रास टैस्ट जीत कर भारत ने श्रृंखला जीत ली तो, शहनाई वालों को आर्डर दे दिया कि थमारे घर के सामने एक महीने तक शहनाई बजनी चाहिये। शहनाई सुन कर लोग अगर यह समझे कि थमारी शादी हो रही है और खाना खाने आ पहुंचे तो क्या करोगे?
हम फीरोजशाह कोटला से मिट्टी लाकर उसके लड्डू बना कर खिलायेंगे।
एक और खबर पढ़ी?
कप्तानी से इस्तीफा दे दिया है और वेस्ट इन्डीज के दौरे पर जाने से इन्कार कर दिया है।
उठा। देखो भाइयों,
थे! हम
वेस्ट इन्डीज जाने से पहले गावस्कर को चाँदी के सिक्कों से तौलने वाले थे। इसके लिये हमको दो-तीन बागड़ी भैंसें बेचनी
नहीं थी। हम तो किरकट
अब तो एक ही चाह रह गयी है, वह यह कि गावस्कर को चाँदी से तोलने की बजाय उन बागड़ी भैंसों के गोबर से तोलना। उस गोबर से गोबर गैस निकाल कर एक शीशी में बन्द कर उसे पकड़ाना।
बगैर गावस्कर के हमारा टीम बगैर
दूल्हे की बारात होगी।
सुना थमने भाई लोगों, कितना बड़ा अनर्थ होने जा रहा है। बगैर दूल्हे की बारात को वेस्ट इण्डीज से बगैर दुल्हन लौटना पड़ेगा। शादी ब्याह का मामला बड़ा नाजुक होता है। हमारी थमारी नाक कटने वाली है। हमारी बारात खाली हाथ लौट आयेगी। हम किसी स्टेडियम में मुंह दिखाने लायक नहीं रहेंगे।
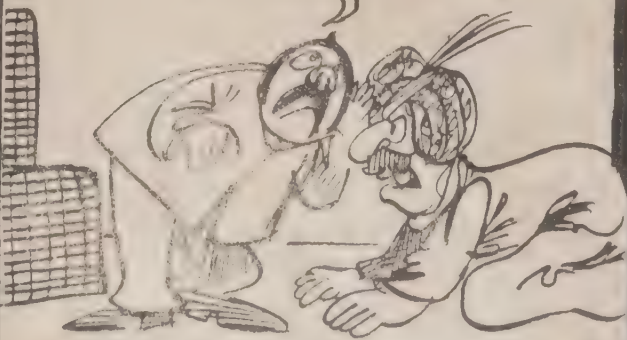
लेकिन हमारे रहते इतना बड़ा अनर्थ नहीं होगा। यह अंधेर गर्दी यहां नहीं चलेगी, हम कभी ऐसा नहीं होने देंगे। हम अभी पहली फ्लाइट से बम्बई जायेंगे और अपनी पगड़ी गावस्कर के चरणों पर रख कर लाज रखने की भीख मांगेंगे। वह ठुकरा नहीं पायेगा।
हमें इस काम के लिए अगर सख्त कदम उठाना पड़े तो उससे भी नहीं हिचकिचायेंगे। भारत के क्रिकेट प्रेमियों निश्चिंत रहो, सिलबिल-पिलपिल ने गावस्कर के वेस्ट इन्डीज भेजने की ठान ली है। अब उसे जाना ही पड़ेगा। जो वादा किया निभाना ही पड़ेगा।
बन गया काम ! मेरे दिमाग में एक बहुत जोरदार आइडिया आया है। उसे आजमाने पर गावस्कर की घिग्गी बंध जायेगी। वह क्लीन बोल्ड हो जायेगा और पैविलियन लौट जायेगा। हो हो हो !
तेरे दिमाग में आइडिया किधर से घुस गया ? तेरे दिमाग में तो गोबर भरा है और गोबर देने के लिये भैंस बंधी खड़ी रहती है। लगता है कि भैंस रस्सा तुड़ा कर भाग गयी और भागते हुए तेरे दिमाग के भाड़े का गेट खुला छोड़ गयी जहां से आइडिया घुसा होगा।
अब थम दोनों कान खोल कर और आंखों में सरसों का तेल डाल कर मेरा आइडिया सुनो। जरा सोचो गावस्कर वेस्ट इंडीज क्यों नहीं जाना चाहता ?
गावस्कर को वेस्ट इंडीज में किसी के पैसे उधार देने होंगे।
नहीं नहीं, मेरा मतलब यह नहीं था ! उसके घर में कौन-कौन हैं ? वह वेस्ट इंडीज न जाकर घर में ही तो रहेगा। किन के साथ रहने के लिये वह वेस्ट इंडीज जाने को राजी नहीं है ?
बीबी मार्शनील और बेटा रोहन
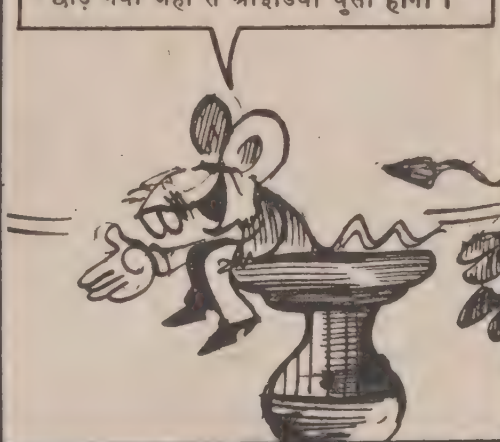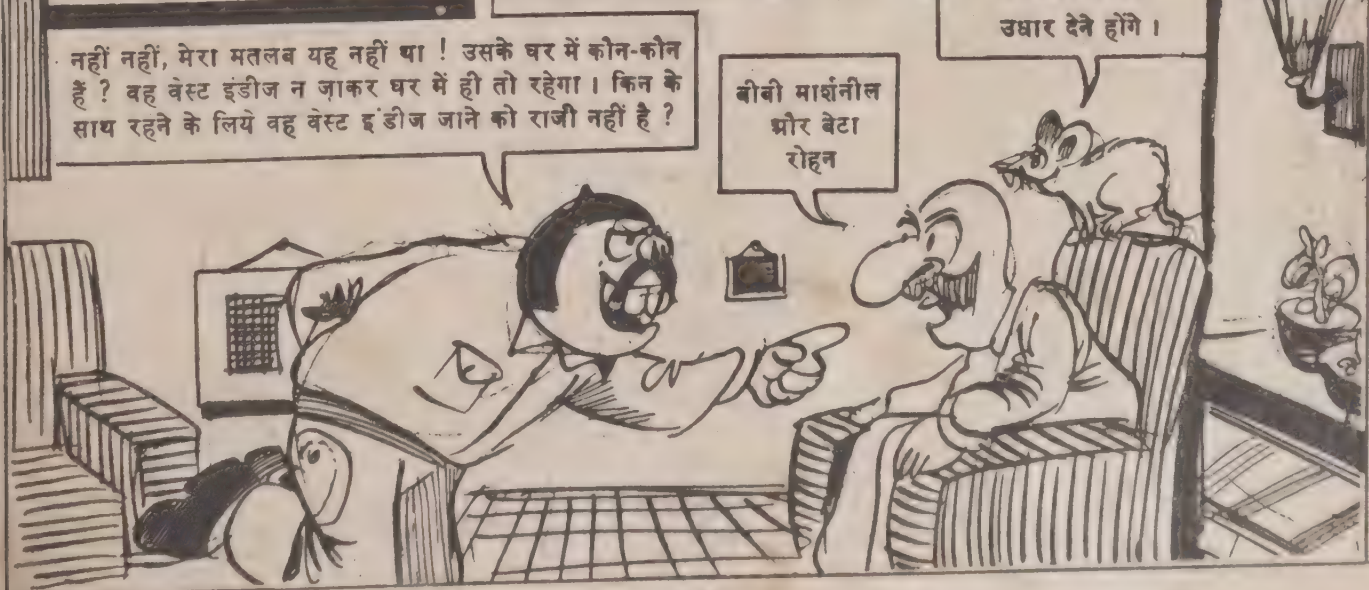
बस यही तो चाबी है उस सारी समस्या की। वह अपनी बीबी और बेटे रोहण से अलग नहीं होना चाहता! अब आई बात कुछ समझ में? हम उसकी बीबी और बेटे को किडनैप करेंगे। अपहरण और फिर ब्लैक मेल।
बेटे और बीबी के गायब होने के बाद गावस्कर को डाक से ब्लैक मेल का खत मिलेगा कि बेटे वेस्ट इंडीज भारतीय टीम के साथ तुम्हें जाना होगा वरना तुम अपने बेटे और प्यारी पत्नी का मुँह न देख पाओगे।
किडनैप करने की बड़ी सुन्दर योजना मेरे दिमाग में आई है। मैं एक पठान का भेष धर कर गावस्कर के घर के बाहर चक्कर लगाऊंगा।
काबुली वाला?
काबुली वाला आया काबुली वाला आया काबुल कंधार से।
काबुली वाला आया, पिस्ता-बादाम लाया, काबुल कंधार से।
काबुली वाले, काबुली वाले, काबुली वाले तेरी झोली में क्या है?
झोली में मेरी जादू की छड़ी, जादू की छड़ी, झोली में मेरी है। आ मेरी बाचा···
काबुली वाले, काबुली वाले, झोली में तेरी, जादू की छड़ी है, जादू की छड़ी है। तो बना दे मुझको परी······
काबुली वाला आया, काबुली वाला आया, काबुल कंधार से, काबुली वाला, काबुली वाला।
लो ऽ ऽ ऽ ऽ बन जाओ परी······ ऊ हा हा हा हा!
धिनक धिना धिनक धिना धिनक धिना धिनक धिना धिनक धिना धिनक धिना
पिरीरिरिरिरिरि टिरीरिरिरिरिरि
शSSS यह राज किसी से मत कहना।
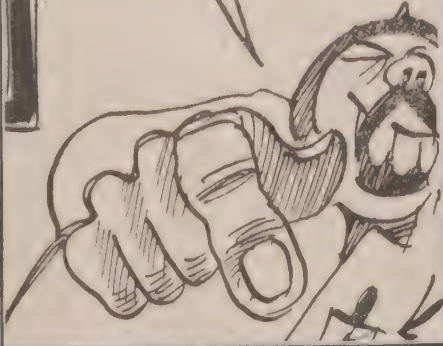
मिसेज गावस्कर, आई एम वेरी सारी, बट SSSS ! मुझे बड़े अफसोस के साथ कहना पड़ता है, आपका बेटा है न रोहण ? वह बाहर सड़क पर खेल रहा था । अचानक एक टैक्सी तेजी से आई वह टैक्सी के नीचे आ गया । हमने हस्पताल पहुंचाया है ।
कहां है मेरा रोहण कहां है ?
मेरे साथ आइए ।
और इस तरह मां बेटा हमारे कब्जे में । हम शाहदरे लाकर उन दोनों को गोदाम में सात तालों के भीतर रखेंगे । पुलिस भी चकरा जाएगी । दूसरे दिन एक्सप्रेस डिलीवरी से गावस्कर को पत्र मिलेगा ।
सुनील गावस्कर, तुम्हारी पत्नी और तुम्हारा बेटा रोहण हमारे कब्जे में हैं । ज्यादा चालाक बनने की कोशिश मत करना । पुलिस को खबर की तो अच्छा नहीं होगा । अगर अपने बेटे और बीवी को सही सलामत देखना चाहते हो तो तुम्हें भारतीय टीम के साथ वेस्ट इंडीज जाना पड़ेगा । वहां तीन डबल सैंचुरियां और पांच सिंगल सैंचुरियां बनानी होंगी । वेस्ट इंडीज के टूर से लौट आने पर तुम्हें तुम्हारा बेटा व बीवी मार्शनील सही सलामत लौटा दिए जायेंगे । साथ में सबूत के लिए तुम्हारे बेटे और बीवी का खत भी नत्थी है ।
SG
मार लिया मैदान ! समस्या हल हो गयी । आहा ! क्या बढ़िया आइडिया आया मेरे दिमाग में ?
यह तो मेरा आइडिया था । मैंने ही तो बताया था कि उनको किडनैप करना पड़ेगा।
खाक आया था तेरे दिमाग में । वह तो मोटा-सा आइडिया था बेकार का । उसको सजा संवार कर अमली जामा तो मैंने पहनाया । समझे ?
गंजे, तू मेरे आइडिये पर हाथ साफ कर रिया है ? तेरी यह हिम्मत ?
भाइयों और बहनों क्रिकेट प्रेमियों, अब गावस्कर को हम वेस्ट इंडीज नहीं भेज पायेंगे । आप कुछ कर सकते हैं तो कर के देख लीजिए । हमारे भरोसे मत रहना । इन दोनों में जबरदस्त जंग छिड़ गयी है । अब भारतीय टीम के वेस्ट इंडीज से लौट आने तक यह हस्पताल में ही अपने दिन गुजारेंगे ।
सिलबिल पिलपिल के नये कारनामे अगले अंक में पढ़िए ।
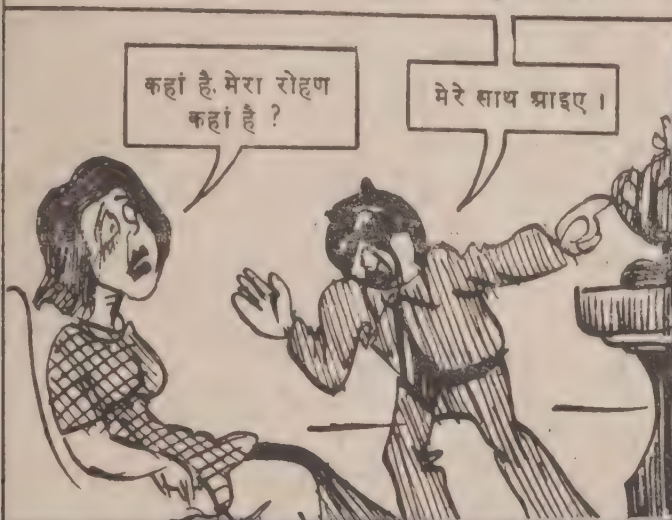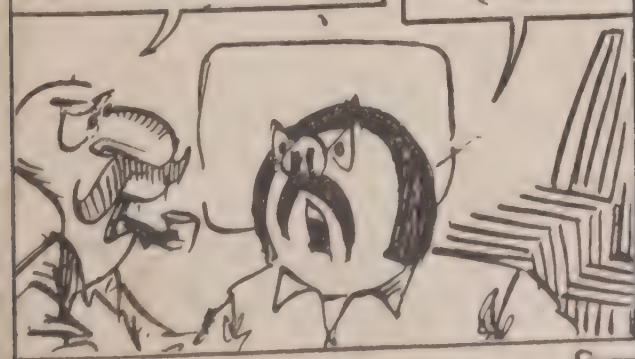
पृष्ठ १७ का शेष भाग

इज्जत लूट ली है तो समझ लो डाक्टरी रिपोर्ट इस सच्चाई का फैसला भी कर सकती है।'

'यस सर···।' पद्मिनी जल्दी से बोली, 'मैं मेड़िकल टैस्ट के लिए तैयार हूं।'

हीरो का चेहरा सफेद पड़ गया··· प्रिंसिपल धम से कुर्सी पर बैठ गए और मेज पर दोनों हाथ मारकर जोर से बोले—

'तुम्हारा अपराध सिद्ध हो गया है··· भगवान न करे अगर तुम अपने नीच प्रयास में सफल हो जाते तो हम पद्मिनी से तुम्हारी शादी कराने का प्रयत्न करते···लेकिन अब हम तुम्हें पांच बरस के लिए नहीं बल्कि पूरे सात बरस के लिए रेस्टीकेट करेंगे।'

पद्मिनी ने पहली बार हीरो के चेहरे पर यह बेबसी की झलक देखी थी और उसका दिल खुशी से उछलने लगा था··· उसकी गर्दन विजयी ढंग से तन गई थी। हीरो ने एक दृष्टि पद्मिनी पर डाली और फिर प्रिंसिपल की ओर हाथ जोड़ कर बोला—

'सर···मुझे सात बरस की नहीं बल्कि जीवन भर की रेस्टीकेशन स्वीकार है लेकिन मेरी आपसे एक प्रार्थना है···मुझे इस साल परीक्षा देने दीजिए सर···मुझे एक बार कालेज में टॉप करने दीजिए···क्योंकि बचपन से अब तक जीवन में पहली बार यह सौभाग्य मुझे प्राप्त होने वाला है।'

'क्या बकते हो···रेस्टीकेशन के बाद तुम परीक्षा में कैसे बैठोगे?'

'सर···मैं आपको वचन देता हूं कि मैं अपनी डिग्री मांगने नहीं आऊंगा···बस मुझे एक बार टॉप करने दीजिए।'

'क्या पागलपन की बातें कर रहे हो?' प्रिंसिपल ने आश्चर्य से कहा, 'जब तुम्हें डिग्री ही नहीं चाहिए तो फिर टॉप करने से क्या लाभ?'

सर! टॉप आने के बाद जो प्रसन्नता मुझे मिलेगी उसका आप अनुमान नहीं लगा

सकते···सर···मैं···मैंने अगर इस साल टॉप कर लिया तो सर पूरे बारह बरस बाद मेरी मां मेरे हाथ से पानी पीने पर सहमत हो जाएगी।'

'व्हाट नानसेंस।'

'यह सच है सर।' हीरो भर्राई आवाज में बोला, 'मैं बचपन ही से बड़ा नटखट था ···मेरा मन पढ़ाई में बिल्कुल नहीं लगता था···एक बार गुस्से में मेरी मां ने मेरे स्वर्गवासी पिता की सौगन्ध खाई थी कि वह मेरे हाथ का पानी तब तक नहीं पियेंगी जब तक मैं कक्षा में सबसे प्रथम नहीं आता।

सर···इस बात को बारह वर्ष हो गए हैं मैं तबसे ही प्रयत्न कर रहा हूं···शुरू क्लासों में तो मैं कमजोर ही रहा लेकिन धीरे-धीरे मेरी बुद्धि तीव्र होती गई···पिछले दो बरस तक मैं कुछ नम्बरों से मात खा जाता रहा···लेकिन अबके मुझे पूरा विश्वास है कि मैं अवश्य ही प्रथम आऊंगा···और सर, इस प्रकार मुझे अपने हाथों अपनी मां को पानी पिलाने का सौभाग्य मिल जाएगा —भगवान के लिए मुझ पर इतनी दया कीजिए चाहे आप मुझसे लिखवा लें कि मैं कभी न डिग्री लेने आऊंगा और न किसी बड़ी नौकरी के लिए ही प्रयत्न करूंगा।'

बोलते-बोलते सचमुच हीरो का गला रुंध गया और आंखें भीग गईं। प्रिंसिपल और पद्मिनी हक्का-बक्का सन्नाटे में बैठे 'हीरो' को तक रहे थे। हीरो ने सुबकी भर कर पद्मिनी की ओर देखा और हाथ जोड़ कर बोला—

'देवीजी! मैं आपके आगे हाथ जोड़ता हूं···मुझ पर नहीं तो मेरी बूढ़ी और बीमार मां पर ही तरस खाईए जो बारह बरस से केवल इस आस पर जिंदा है कि कभी उसका बेटा भी फर्स्ट आएगा···वह बहुत बीमार रहती है देवीजी···अगर मैं परीक्षा न दे सका तो शायद वह यह आघात सहन न कर सकेगी।'

कहते-कहते हीरो रो पड़ा···और बोला—

'आप नहीं जानतीं देवीजी···मेरी मां ने मेरे पिता का सपना पूरा करने के लिए मुझे कितने परिश्रम से पढ़ाना आरम्भ किया था··· मुझे पढ़ाते-पढ़ाते उसने बीमारी मोल ली थी। देवीजी—लेकिन जब तक मैं गांव में था मुझे शरारतों के सिवा कुछ नहीं आता था··· स्कूल में लड़कों के अलावा मास्टर जी से भी छेड़छाड़ करता था···उनकी टोपी में मेंढक रख देता था···गुलेल से डाकुओं को मार-मार कर भगाता था—लेकिन मैं अपनी मां को खुश नहीं रख सका।

हीरो अभी जाने क्या-क्या बोल रहा था···और पद्मिनी को तो ऐसा लग रहा था जैसे एकाएक सारा ब्रह्मांड घूमने लगा हो—उसे अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हो रहा था—उसका मस्तिष्क सनसना रहा

था और उसमें आवाजें उभर रही थीं—

'यह मेरा अविनाश है।'

'मेरे बचपन का साथी अविनाश।'

'मेरा पहला और आखिरी प्यार अविनाश।'

'मेरा सब कुछ अविनाश।'

पद्मिनी के कल्पना पट पर वह दृश्य उभर आया जब अविनाश ने मास्टरजी की टोपी में मेंढक रखा था···फिर वह दृश्य जब अविनाश ने गुलेल से पत्थर मार-मारकर डाकुओं को भगा दिया था और पद्मनी को बचा लिया था···उसकी आत्मा चिल्लाने लगी—

'मैं अपने अविनाश को सजा दिलवा रही थी।'

'झूठा आरोप लगाकर मैं उसे कालिज से निकलवा रही थी।'

अचानक उसके कानों से प्रिंसिपल की आवाज टकराई।

हमें खेद है अविनाश···तुम्हारे साथ सहानुभूति होते हुए भी हम तुम्हारे लिए कुछ नहीं कर सकते—अपराध की सजा मिलनी

बोलते अक्षर

ही चाहिए···तुमने एक शरीफ लड़की की इज्जत पर हाथ डाला था···तुमको सात बरस के लिए जरूर रेस्टीकेट किया जाएगा।'

अचानक पद्मिनी हड़बड़ाकर खड़ी होती हुई बोली—

'ओ···नो···सर इनका रेस्टीकेशन मत कीजिए।'

प्रिंसिपल और अविनाश ने एक साथ चौंककर पद्मिनी की ओर देखा···प्रिंसिपल ने आश्चर्य से कहा—

'यह तुम क्या कह रही हो बेटी ? अपराधी को सजा मिलनी ही चाहिए।'

'नहीं, नहीं···यह अपराधी नहीं है।'

'व्हाट···?'

'सर ! मैं भगवान की सौगंध खाती हूँ···मैंने आपके सामने जो बयान दिया था वह झूठा था···इन्होंने कभी मेरी इज्जत पर हमला नहीं किया था।'

अविनाश सन्नाटे में रह गया था। प्रिंसिपल ने तेवरी चढ़ाकर कहा—

'फिर तुमने इतना बड़ा आरोप इस व्यक्ति पर क्यों लगाया ?'

'सर···मैंने इनसे इस बात का बदला लिया था कि इन्होंने मेरे ऊपर क्लास-रूम में रिजवी साहब के बटुवे में मेंढक रखने का आरोप लगाकर मुझे सात दिन के लिए क्लास से निकलवा दिया था···सर, इसका बदला लेने के लिए इन्हें कालिज से रेस्टीकेट कराने की यही स्कीम बनाई थी।'

'मिस पद्मिनी ! जानती हो इस झूठे आरोप की सजा में अब तुम्हें पांच बरस के लिए रेस्टीकेशन की सजा मिल सकती है।'

'सर···मुझे आप पांच बरस नहीं दस बरस के लिए रेस्टीकेट कर दीजिए लेकिन इन्हें सजा मत दीजिए सर, इन्हें सजा मत दीजिए।'

यह कहकर पद्मिनी बिना उत्तर की प्रतीक्षा किए तेजी से ऑफिस से निकल गई और अविनाश भौंचक बैठा उसे जाते देखता रह गया। प्रिंसिपल की आंखें भी आश्चर्य से फैली हुई थीं···कुछ देर वह दरवाजे की तरफ देखते रहे और फिर उन्होंने ठन्डी सांस लेकर कुर्सी की पीठ से टेक लगा ली।

पद्मिनी की कार सड़क पर फर्राटे भर रही थी और उसका दिल जोर-जोर से धड़क रहा था। अधिक प्रसन्नता से उसका पूरा बदन थरथर कांप रहा था···बार-बार खुशी का एक गोला-सा उठता और दिल के पास आकर रुक जाता···आंखें भर आने लगतीं—फिर वह होंठ भींचकर कार का वेग और बढ़ा देती।

'हे भगवान ! कहीं मैं कोई सपना तो नहीं देख रही ?'

'कहीं मैं खुशी से पागल न हो जाऊँ।'

'मेरा अविनाश मिल गया।'

'मेरा बचपन का साथी···मेरा जीवन···मेरी आत्मा का दूसरा स्वरूप।'

थोड़ी देर बाद कार बंगले के कम्पाउंड में प्रविष्ट हुई और बरामदे के पास पहुँचकर रुक गई। पद्मिनी थरथर कांपती हुई कार से उतरी···जैसे ही वह अन्दर आई ऊपर से सेठ साहब उतरते दिखाई दिए—

'अरे···तुम आ गयीं बेटी···मैं तुम्हारी ही राह देख रहा था···अभी-अभी हस्पताल से आया हूँ—तुम्हारी मम्मी को वहां पहुँचा-

कर—आज उनकी पट्टी बदल रही है···शाम को उन्हें लेने चलना है—उन्होंने चलते हुए कह दिया था कि पद्मिनी को जरूर साथ लेकर आना।'

बोलते-बोलते सेठ साहब नीचे पहुंच गए थे···एकाएक वह पद्मिनी का चेहरा देखकर उछल पड़े और आश्चर्य से बोले—

'पद्मिनी—क्या हुआ तुझे बेटी !'

'डैडी...डडी···! !'

पद्मिनी सेठ साहब से लिपट गई···वह हंस रही थी और साथ-साथ रोने भी लगती थी··· सेठ साहब बौखला से गये और पद्मिनी की पीठ थपथपाकर बोले—

'पद्मिनी बेटी···क्या हुआ मेरी लाल ? कुछ बता तो सही।'

'डैडी···आज मैं बहुत खुश हूं डैडी—।

'खुश है···, सेठ साहब भी प्रफुल्लित होकर बोले, 'हे भगवान ! तेरा लाख-लाख शुक्र है—लेकिन तूने तो मुझे बिलकुल डरा दिया था—और बेटी इस विशेष खुशी का कारण क्या है···हम भी तो सुनें।'

'डैडी···आज···आज पूरे बारह बरस बाद मुझे वह मिल गया है।'

'बारह बरस बाद···कौन मिल गया है बेटी ?'

'वही डैडी···जिसके लिए मैंने अब तक किसी से शादी नहीं की थी—किसी को जीवन साथी बनाना स्वकार नहीं किया था।'

'क्या मतलब ?' सेठ साहब उछल पड़े।

'हां डैडी—वह मेरे बचपन का प्यार था···वह मुझे बहुत प्यार करता था और मैं उसे बहुत प्यार करती थी···लेकिन हम बचपन में [illegible] दूसरे से अलग हो गए थे···पूरे बारस बरस पहले—लेकिन इन बारह बरसों में भी कभी अपने दिल से उसका प्यार नहीं निकाल पाई—मैं जानती थी कि मेरे मन में उसका स्थान और कोई भी नहीं ले सकता—इसीलिए मैंने शिव से शादी करना स्वीकार नहीं किया था और मैंने उसको राखी बांधकर अपना भाई बना लिया था···क्योंकि मैं जानती थी डैडी कि अगर हमारा प्यार सच्चा है तो एक-न एक दिन वह मुझे जरूर मिलेगा—अगर वह मुझे नहीं मिला तो फिर मैं जीवन भर शादी नहीं करूंगी—और अब वह मुझे मिल गया है—डैडी—वह मुझे मिल गया है।'

'सच बेटी···!' सेठ साहब खुशी से कंपकंपाती आवाज में बोले, 'तो अब तू शादी कर लेगी···इस घर में शहनाईयां गूंजेंगी।'

'हां डैडी—अब आपका यह सपना पूरा हो जाएगा।'

शेष आगामी अंक में

(पृष्ठ ७ से आगे)

पृष्ठ २३ से आगे

बाप है, बीबी है और बच्चे हैं। उनके प्रति भी उसका कर्त्तव्य है। साल भर क्रिकेट के कोल्हू में जुटा रहेगा तो कैसे ये दायित्व निभा पायेगा। उस पर तुर्रा यह कि जो क्रिकेटर अपनी पत्नी को दौरे पर साथ रखता है उस पर अधिकारी टेढ़ी नजर डालते हैं बीबी का सफर का खर्च ही इतना पड़ता है कि जो टैस्ट के लिये क्रिकेटर को मिलता है वह बराबर हो जाता है। बीबी का कोई खर्च बोर्ड नहीं देता। क्रिकेटरों की बीबियां कोई सतयुग की नारियां तो हैं नहीं कि पति वर्षों बाहर रहे और वह घर बैठी राम नाम की माला जपती रहें। वह भी हम-आप जैसे ही आज के जमाने के साधारण व्यक्ति हैं। इस के अतिरिक्त कुछ क्रिकेटर (जैसे कपिलदेव) विद्यार्थी भी हैं। क्या वह क्रिकेट सामन्तों की भूख मिटाने के लिए शिक्षा ही ग्रहण न करें।

इसलिये अधिकारियों को चाहिये कि गावस्कर के निर्णय से न तिलमिला कर इस सारी समस्या पर मानवीय रुख अपनायें और क्रिकेटरों की वाजिब शिकायतें दूर करें तथा बदला लेने की भावना से प्रेरित न हों आखिर क्रिकेट के लिए जो कुछ सुनील गावस्कर ने किया है उसका सौ वां हिस्सा भी इन अधिकारियों ने नहीं किया। आज क्रिकेट के क्षेत्र में भारत जो सम्मान से सिर उठाने लायक हुआ है उसमें गावस्कर का बहुमूल्य योगदान है और आगे भी रहेगा। नहीं तो ऐसा समय भी आ सकता है जब टैस्ट मैचों और विदेशी दौरों के लिये भारत के अधिकतर चोटी के खिलाड़ी स्वयं को उपलब्ध न करा पायेंगे तथा दूसरे दर्जे की टीमें बाहर भेजनी पड़ेंगी।

(सुनील की वेस्टइंडीज न जा पाने की अपनी मजबूरी है एक और। उन्होंने अपनी पुस्तक में वेस्टइंडीज जमैका के दर्शकों को जंगली व बर्बर कहा है इसलिये शायद उनका वहां जाना ठीक न हो। जानें लोग कैसा व्यवहार करें। अतः मद्रास में ही कप्तानी पद से त्याग पत्र देकर गावस्कर ने अपनी सद्भावना व दूरदर्शिता का ही परिचय दिया है। अब संभावित कप्तान को कलकत्ता व बम्बई में एम० सी० सी० के विरुद्ध कप्तानी कर कुछ अनुभव प्राप्त होगा।

हजार रुपये

घर में सेठ जी और सेठानी जी दो ही ही थे। रात में सेठ जी कमरे से बाहर निकलते भी बहुत डरते थे। रात को वे पेशाब करने उठते तो भी वे दरवाजे को थोड़ा खोलकर बाहर झांकते। जब उन्हें पूरी तरह विश्वास हो जाता कि आंगन में कोई नहीं है, तब वे कमरे से बाहर निकलते। उन्हें चोरों से बड़ा डर लगता था। आज जब वे रात को पेशाब करने उठे, तो रोजाना की तरह थोड़ा दरवाजा खोलकर बाहर झांका, तो एक चोर ने उनकी मूंछ पकड़ ली। सेठ जी ने काफी कोशिश की लेकिन चोर से अपनी मूंछ नहीं छुड़ा पाये। तभी उन्हें एक तरकीब सूझी। बोले, "सेठानी जी, जल्दी से पांच सौ रुपये निकाल कर लइयो।"

"अभी लाई, लेकिन रात में पांच सौ रुपये की क्या जरूरत पड़ गई?" अन्दर से सेठानी ने पूछा।

"अरी जल्दी ला, यह भी शुक्र है मूंछ ही चोर के हाथ पाई है, अगर नाक हाथ आ गया होता, तो एक हजार रुपये देने पड़ते।"

चोर ने सेठ जी से यह बात सुनी तो उसने मूंछ छोड़कर नाक पकड़ना चाहा, लेकिन सेठ जी अपना मुंह अन्दर कर चुके थे। चोर सेठ जी की चतुराई को समझ गया और खाली हाथ अपने घर लौट आया।

पिटारा

● "मम्मी, मैं खेलने जा रहा हूं···"

"नहीं बेटे, मुझे तुम्हारा यह खेल पसंद नहीं है। परसों तो पैर तुड़ाकर आया था, आज···"

"आज की चिंता मत करो मम्मी, पापा जी का हेलमेट साथ ले चला हूं।"

● "तुमने इस हफ्ते चार चोरियां की हैं।" जज ने चोर से पूछा।

"हां सरकार।"

"लेकिन क्यों?"

"साहब, पहली तीन चोरियों में केवल जेवर हाथ लगे, वे बीवी ने ले लिये, इसलिए मुझे चौथी चोरी करनी पड़ी।"

● "तुम गाय का दूध बेचते हो?" ग्राहक ने दूधिया से पूछा।

"नहीं बाबू जी।"

"तो भैंस का?"

"नहीं बाबू जी!"

"तो किसका दूध बेचते हो?" ग्राहक ने पूछा।

"जी, लाला किरोड़ीमल का।" दूध बेचने वाले लड़के ने बताया।

● एक शराबी (दूसरे से): यार, मरने के बाद हम स्वर्ग जायेंगे या नरक?"

दूसरा: इसका मुझे क्या पता! तुम्हारा क्या विचार है?

पहला: एक जगह तो जाना ही होगा?

दूसरा: तुम चले जाना। मैं तो पीने के बाद कहीं आ-जा नहीं सकता।

● "पिछली बार होली खेलकर जब मैं घर लौटा तो मम्मी ने मुझे पहचानने से इंकार कर दिया, तो मैं रो पड़ा था।" राज ने अपने दोस्तों को बताया।

"फिर क्या हुआ?" सभी साथी एक साथ बोले।

"मेरा रोना सुनकर मम्मी ने मुझे पहचान लिया और घर ले आईं।" राज ने बताया।

—विजयदत्त शर्मा

बॉक्सिंग (मुक्केबाजी)

बॉक्सिंग का खेल संसार के प्रायः सभी देशों में प्रचीन काल से ही किसी न किसी रूप में खेला जाता रहा है।

वर्तमान में यह खेल इतना अधिक लोकप्रिय है कि इसकी प्रतियोगिता में सबसे अधिक धन लगाया जाता है तथा बॉक्सर (मुक्केबाज) को भी सभी खेलों की अपेक्षा सबसे अधिक धन दिया जाता है। बॉक्सिंग खेल एक ऐसा व्यायाम है जिससे भुजाएं बहुत शक्तिशाली बन जाती हैं। शरीर ठोस और सुगठित बन जाता है। साथ ही शरीर चीते की तरह फुर्तीला बन जाता है।

बॉक्सिंग का क्षेत्र (रिंग)—बॉक्सिंग का मंच १२ से २० वर्ग फुट का चौकोर होता है। चारों ओर एक-एक फुट की सीमा भी होती है।

मंच के चारों ओर का क्षेत्र (सीमा से) खम्भों के द्वारा रस्सियों से घिरा होता है। ये रस्सियाँ एक-एक डेढ़-डेढ़ फुट की ऊंचाई पर कई घेरों में बंधी होनी हैं।

खंभों की तथा रस्सियों के घेरों की ऊंचाई ४ फुट के लगभग होनी चाहिए।

खंभों पर अन्दर की ओर पैंड लगे होते हैं ताकि इन खंभों से खिलाड़ी को चोट न लग सके।

मंच (अखाड़ा) की सतह बढ़िया रबर के गद्दों की होती है तथा ऊपर कैनवास मढ़ा होता है। कहीं-कहीं प्लाइवुड के ऊपर गद्दे डालकर भी अखाड़ा बनाया जाता है ताकि नीचे गिरने पर खिलाड़ी को चोट न लग सके।

ग्लोब्स—बॉक्सिंग के लिए गद्देदार खोलों को हाथों में पहनना पड़ता है। ये ऊपर से मुलायम चमड़े के होते हैं तथा इनके

अन्दर मुलायम गद्दियां लगी होनी हैं। वजन में एक ग्लोब ८ औंस का होना है। जूनियर खिलाड़ियों के लिए वजन में कुछ छूट हो सकती है। ग्लोब को पहनकर ही बॉक्सिंग का खेल खेला जाता है।

ग्लोब के पीछे का यानी उंगलियों और हथेलियों के पीछे का भाग ही मुक्केबाजी में आक्रमण करने के लिए उपयोग किया जाता है।

पोशाक—पोशाक के लिए पैरों में कैनवास के जूते तथा घुटनों से नीचे मोजे पहनने चाहिए। चमड़े के जूते नहीं पहनने चाहिए।
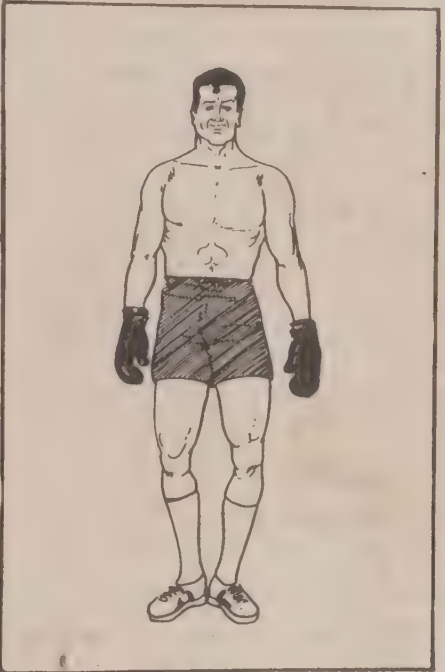
नेकर घुटनों से २-३ इंच ऊपर तथा ढीली होनी चाहिए ताकि पैरों के संचालन में किसी प्रकार का व्यवधान पैदा न हो। शरीर पर बनियान नहीं पहनी जाती। क्योंकि प्रहार करते समय बनियान ग्लोब में उलझ सकती है।

बाक्सिंग के राउन्ड्स—बॉक्सिंग लड़ने के लिए समय निर्धारित होता है। वर्गों के अनुसार ये राउन्ड्स विभिन्न समय में आयोजित किये गए हैं।

१. जुनियर खिलाड़ियों के लिए ३ राउण्ड खेले जाते हैं तथा प्रत्येक राउण्ड २ मिनट का होता है।

२. मध्यम वर्ग के खिलाड़ियों के लिए दो राउण्ड २-२ मिनट के तथा तीसरा राउण्ड ३ मिनट का खेला जाता है।

३. सीनियर खिलाड़ी के लिए ३ राउण्ड होते हैं जो ३-३ मिनट के होते हैं।

खिलाड़ियों के वर्गों के अनुसार राउण्ड ज्यादा भी हो सकते हैं।

खेल का प्रारम्भ—बॉक्सिंग का खेल प्रारम्भ होने से पहले अम्पायर दोनों बॉक्सरों के हाथ तथा ग्लोब्स दबाकर अच्छी तरह जांच करता है कि कहीं अन्दर कोई ठोस या कड़ी वस्तु तो नहीं है।

इसी तरह वह जूते भी अच्छी तरह जांच लेता है।

खिलाड़ी की मैदान में उतरते ही पहले डाक्टरी जांच भी होती है।

इसके बाद दोनों खिलाड़ी अम्पायर के निर्देश पर एक-दूसरे के ग्लोब्स आपस में मिलाकर हाथ मिलाते हैं।

बॉक्सिंग समाप्त होने पर भी हाथ मिलाकर एक-दूसरे का अभिवादन करना चाहिए। यह सद्भाव प्रकट करने का सबसे उत्तम तरीका है।

खेल शुरू होते ही खिलाड़ी को अपना बायां पैर आगे बढ़ाकर आगे बढ़ना चाहिए फिर दायां पैर बढ़ाकर।

खिलाड़ी को अपना बायां हाथ हमेशा अपने मुँह के आगे रखना चाहिए तथा दायाँ हाथ पेट की सीध में।

इससे आपको बायें हाथ से तो अपने मुँह और सिर पर हुए आक्रमण को बचाने का अवसर मिलेगा तथा दायें हाथ से आक्रमण करने का।

बहुत से खिलाड़ियों का उल्टा हाथ कार्य करता है। ऐसे खिलाड़ी दायें हाथ से बचाव का कार्य करते हैं। खिलाड़ी को बॉक्सिंग के समय एक जगह स्थिर नहीं रहना चाहिए,
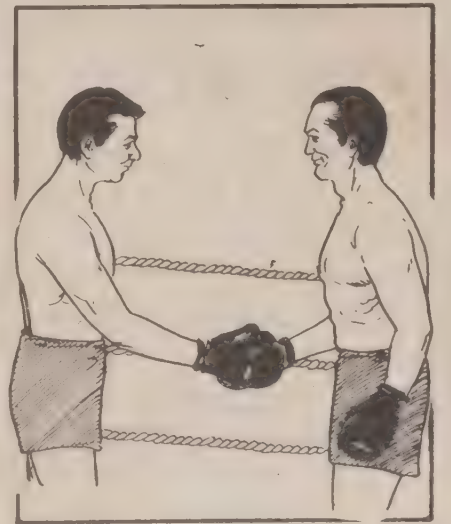
उसे हाथ-पैर बराबर चलाते हुए आगे-पीछे थोड़ी उछाल लेते हुए रहना चाहिए।

रिंग में आकर दोनों बॉक्सर एक-दूसरे पर खुलकर आक्रमण-प्रत्याक्रमण करते हैं। जो खिलाड़ी अपने प्रतिद्वन्द्वी पर घूंसे का ऐसा प्रहार कर देता है कि वह गिर पड़े या चोट खाकर लड़ने की स्थिति में न रहे तो चोट-मारने वाले खिलाड़ी को एक अंक प्राप्त हो जाता है।

अंक नं० ३० में प्रकाशित प्रतियोगिताओं के लिए

वर्ग पहेली का हल (निर्णय लाटरी द्वारा) **विजेता—राजेन्द्र** कुमार रोल नं० ६६, **बी० एस० सी० द्वितीय वर्ष** दयाल **सिंह कालेज, लोधी रोड**, नई दिल्ली

हे	मा	मा	लि	नी
ठ	■	च	म	ची
बा	सी	■	यो	न
र	क	म	■	ज
■	र	ह	ब	र

कार्टून बनाइये-विजेता—अल्पना भाटिया ६०, जगन्नाथपुरी, मथुरा-२८१००१

सोचिये और तुक्कम तुक्का का किसी भी पाठक ने संतोष जनक हल नहीं भेजा।

अंक नं० ३१ में प्रकाशित गेंद ढूंढो प्रतियोगिता के विजेता—सुखवीर भूई, म० नं० ११२ **मोहाली**, पंजाब

अंक नं० ३२ में प्रकाशित शीर्षक प्रतियोगिता का किसी भी पाठक ने उचित **शीर्षक नहीं भेजा।**

अंक नं० ३३ में प्रकाशित गेंद ढूंढो प्रतियोगिता का किसी भी पाठक ने सही हल नहीं भेजा।

अंक ३४ मे प्रकाशित प्रतियोगिताओ के परिणाम

शीर्षक सुझाइये प्रतियोगिता—शीर्षक : स्त्री—अजी क्या आज आपकी लाटरी निकल गई है जो हवा में उड़ते हुए घर में प्रवेश कर रहे हो ?

विजेता—प्रदीप कुमार, केशरी रेस्ट हाउस, नीनी बाग वाराणसी।,

सोचिये प्रतियोगिता—अधिक चालाकी और जल्दबाजी से आदमी धोखा खाता है।

विजेता—अजीत कुमार, म० न० एस० ६|५८, अर्दली बाजार, वाराणसी—२

अंक **१** में प्रकाशित वर्ग पहेली का सही हल।

किसी भी पाठक ने सही हल नहीं भेजा।

त	र	ब	त	र
ल	सी	■	ला	मी
वे	द	■	क	जा
■	लो	ता	■	बी
लौ	ना	व	ला	■

दीवाना-कैमल रंग भरो प्रतियोगिता नं. ११ का परिणाम

प्रथम पुरस्कार विजेता : परविन्दर जफात सुपुत्र श्री अजीत सिंह, फाइन वुड एण्ड इन्जीनीयरिंग वर्कस, मुखेरी रोड, होशियारपुर (पंजाब)।

द्वितीय पुरस्कार विजेता : विक्रम द्वारा खेम सिंह, मादना बाजार, माई सेवा, अमृतसर।

तृतीय पुरस्कार विजेता : महदेव, ५१६|३, इन्द्रयणी दर्शन, देहू रोड (पुणे) महाराष्ट्र।

कैम्मल आश्वासन पुरस्कार

१. आर. एम. बावेल—इन्दोर. २. ललित-विधानी—जोधपुर. ३. कुमारी मालिनी देवी गया—रायपुर. ४. सुशील कुमार—नई दिल्ली. ५. मनोज कुमार भारती—दिल्ली।

दीवाना आश्वासन पुरस्कार

१. पुरुषोत्तम कालरा—नई दिल्ली. २. अनवर खां—सहारनपुर. ३. शाहिद अली—नैनीताल. ४. बालकृष्ण महर्जन—काठमाण्डू. ५. चन्दन कुमार आहूजा—बंगलौर

कैमल सर्टीफिकेट

१. कुमारी भारती गोयल—मुजफ्फर नगर, २. प्रदीप कुमार गर्ग—गया (बिहार), ३. ईश्वरसिंह वर्मा—फरीदाबाद, ४. कु. भारती लखवानी—इन्दौर, ५. तरनजीत सिंह—नई दिल्ली, ६. स्नेह लता कुमारी—देहूरोड, पूना, ७. राजेन्द्र चोपड़ा—जालन्धर, ८. कु. अजू सांगवान—जबलपुर, ६. प्रदीप कुमार श्रीवास्तव—रमड़ा कोठी, देवरिया, १०. मनताम सिंह—अमृतसर।

समाचार पंजीयन (केन्द्रीय) नियम १६६६ के ८ ब नियम (संशोधित) से सम्बन्धित प्रेस और पुस्तक अधिनियम की धारा १६-डी की उपधारा (बी) अन्तर्गत अपेक्षित दिल्ली के दीवाना तेज साप्ताहिक नामक पत्र के स्वामित्व तथा अन्य बातों का ब्यौरा।

(१) प्रकाशन स्थान : दिल्ली

(२) प्रकाशन की आवर्तिता : साप्ताहिक

(३) मुद्रक का नाम : पन्नालाल जैन
राष्ट्रीयता : भारतीय
पता : १२२८, वकीलपुरा, दिल्ली-६

(४) प्रकाशक का नाम : पन्नालाल जैन
राष्ट्रीयता : भारतीय
पता : १२२८, वकीलपुरा, दिल्ली-६

(५) सम्पादक का नाम : विश्वबन्धु गुप्ता
राष्ट्रीयता : भारतीय
पता : ५ टॉलस्टाय मार्ग, नई दिल्ली।

(६) उन व्यक्तियों के नाम और पते जो समाचार पत्र के स्वामी और भागीदार या कुल पूंजी के एक प्रतिशत के अधिक के शेयर होल्डर हैं। दि डेली तेज प्राइवेट लि०, नया बाजार, दिल्ली-६

१. तेज एन्डोमेण्ट ट्रस्ट बर्न वस्टन रोड, दिल्ली-६
२. श्रीमती रक्षा सरन, नटकॉफ हाउस, दिल्ली।
३. मेजर जनरल हिज हाइनेंस नवाब सर सैय्यद रजा अली खां बहादुर हर और हाइनेंस रियासत जमानी बेगम खास बाग, रामपुर।
४. राय बहादुर बनारसी दास एण्ड कम्पनी प्राइवेट लि०, सदर बाजार, अम्बाला छावनी।
५. मे० बी० एस० हरीचन्द कपूर एण्ड सन्स, कोहिनूर सिनेमा, राटेड रोड, दादरा बम्बई।
६. मे० बिहारी लाल बैनीप्रसाद महालक्ष्मी मार्केट, चांदनी चौक, दिल्ली।
७. लाला कृष्ण दत्त, १३ बाराखम्भा रोड, नई दिल्ली।
८. मे० अपर इण्डिया शुगर मिल्स लि० खतोली।
६. श्री विश्व बन्धु गुप्ता, ५ टॉलस्टाय मार्ग, नई दिल्ली।
१०. श्री विजय कुमार १७, बाराखम्भा रोड, नई दिल्ली।
११. श्री धर्मपाल गुप्ता, कॉटेज नं० ६, ओबराय एपार्टमेन्ट अलीपुर रोड, दिल्ली-११०००६।
१२. श्री रमेश गुप्ता, कॉटेज नं० ६, ओबराय एपार्टमेन्ट, अलीपुर रोड, दिल्ली-११०००६।
१३. कुमारी मंजुल गुप्ता, ५ टॉलस्टाय मार्ग, नई दिल्ली।
१४. श्री सतीश गुप्ता, ५, टॉलस्टाय मार्ग, नई दिल्ली।
१५. श्री प्रेम बन्धु गुप्ता, डी-८५४, न्यू फ्रेंन्डस कालोनी, नई दिल्ली-११००६५।
१६. श्रीमती सोनादेवी गुप्ता, ५, टॉलस्टाय मार्ग, नई दिल्ली

मैं पन्नालाल जैन घोषित करता हूं कि मेरी जानकारी के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सही हैं।

पन्नालाल जैन
प्रकाशक के हस्ताक्षर

१-३-१६८०

बहुत से नेता एक दूसरे के मित्र होते हुए भी इस प्रकार और आपसी प्रेम प्यार का प्रदर्शन करेंगे।

बाबू जी एक बार फिर कहेंगे कि चुनाव के बाद जनता पार्टी एक बहुत बड़ी ताकत बनकर सामने आयेगी।

और जनता पार्टी के जनसंघी नेता वही राग अलापेंगे…यह बीज बोयेंगे, अच्छी फसल काटेंगे।
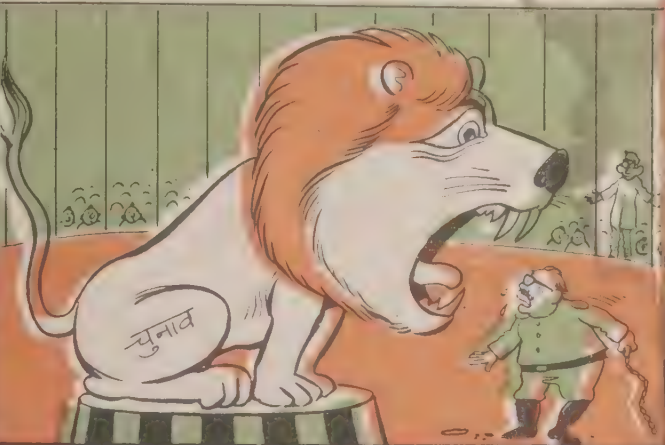
वोट खरीदने के लिए एक बार फिर चीनी की बोरियों से कमाये रुपयों की बोरियाँ खुल जायेंगी।
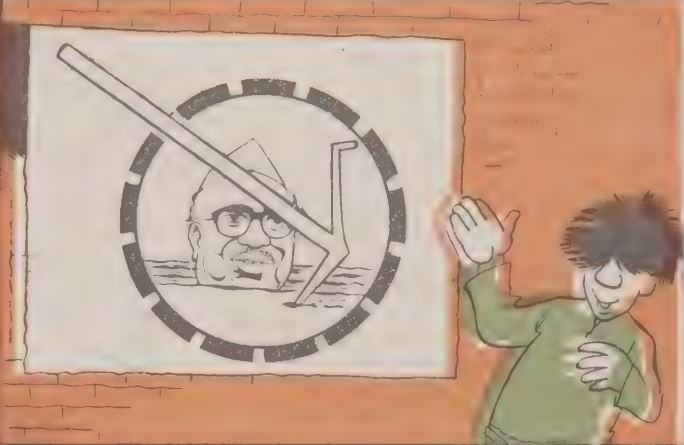
विरोधी पार्टियाँ एक दूसरे के साथ होने पर भी एक दूसरे को पछाड़ने में लगी रहेंगी।

भूखी जनता के गम में आंसू बहाने के लिए लच्छेदार भाषण लिखे जाने लगेंगे।

हां, अब सुनाओ, तुमने क्या लिखा है मेरे आज के भाषण में।

लोग फटे पुराने जूते और सड़े अंडे और टिमाटर सप्लाई करने के लिए राजनारायण की कोठी की ओर भागने लगेंगे।
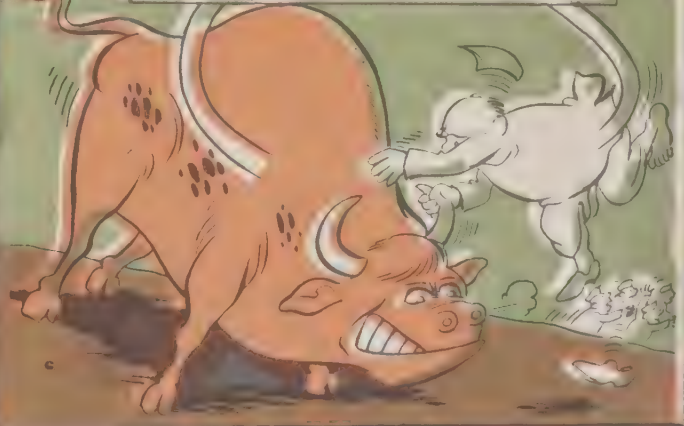
किसान नेता को उसके अपने आदमी समझायेंगे, ऊंची कुर्सी का ख्वाब छोड़िये चौधरी जी। पंचायतों के चुनाव हुए तो परलोकदल का क्या होगा, यह सोचिये
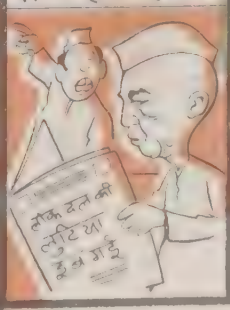
राजनारायण को मशवरा दिया जायेगा कि अब भी अपने आप को पवित्र करना है तो अपने ऊपर "मोरारजी जल" छिड़क लें।

कोई भूचाल नहीं आयेगा, तुम पर छत्त नहीं गिरेगी, मोटर के नीचे नहीं आओगे, बाढ़ में नहीं डूबोगे, कोई 'स्काई लैब' तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकेगा, सूर्य ग्रहण तुम्हें अंधा नहीं करेगा, बड़ा सुन्दर भविष्य है तुम्हारा, पर चुनाव में खड़े होने तक।

आगामी अंक में देखिये, एक और लाजवाब सवाल।

आदिमानव
आज क्या बात है इतने घबराये हुए क्यों नजर आ रहे हो ?
आज कोई भयानक घटना होने वाली है मेरी आंख सुबह से ही फड़क रही है ।
जब शिकार करने के लिए मैं सुबह उठ कर गुफा से आया तो रास्ते को एक काली बिल्ली काट गयी । तुम तो जानते ही हो कि काली बिल्ली का रास्ता काटना कितना बुरा अपशकुन है । रात भर गुफा के बाहर गीदड़ और सियार बोलते रहे । रह-रह कर हवा हरहरा कर चलती रही ।
सारी सुबह अपशकुन पर अपशकुन होते रहे । नदी किनारे पहुँचा तो मुझे खाली तूम्बे वाली औरत मिली, खाली बर्तन का मिलना भी तो अपशकुन हुआ ।
पहाड़ की चोटी पर रहने वाले बाबा ने भी बताया कि आज का दिन मेरे लिए घोर अशुभ है । आज अगर मैं जीता बच गया तो अगले पांच साल तक कुछ नहीं होगा ।
तुम तो बेकार ही घबरा रहे हो ।
मैं बेकार नहीं बरा रहा हूं सारे लक्षण बताते हैं कि मुझ पर घोर विपत्ति टूटने वाली है आज ! घर चलकर देखते हैं कि खैरियत तो है ।
ओ जी, तुम सुबह से कहां गायब हो गये थे ? मैं तुम्हारे नहाने के लिए पानी गरम कर तुम्हारा कब से इन्तजार कर रही हूं । पाँच साल बाद तो नहाने की बारी आती है वह भी तुम्हें याद नहीं रहता । यह रहा बांस का गलास और लक्ज पत्थर जिस्म रगड़ने के लिये । जल्दी तैयार हो जाओ । पानी ठंडा हो जायेगा ! तुम्हें तो कुछ याद ही नहीं रहता ।
मैं तो चलता हूं खुदा तुम्हारी खैर रखे ।
देखो मैंने क्या कहा था ?
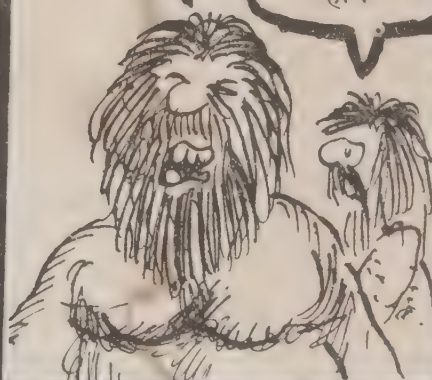
प्र० : निओन लाइट में कैसे प्रकाश होता है ? राजेन्द्र—कानपुर

उ० : रात्रि को सड़कों तथा दुकानों पर चमकीली निग्रोन लाइट सदा ही हमारे मन को हर्षित तथा प्रसन्न करती है । परन्तु वास्तव में हर प्रकार की ट्यूब लाइट केवल नीग्रोन गैस से ही नहीं बनाई जाती अपितु अन्य गैसें जैसे हिलियम, आरगोन, क्रिपटन तथा जीनोन इत्यादि गैसों का प्रयोग भी इस कार्य के लिए किया जाता है ।

हर गैस के भीतर विद्युत तरंग भेजने पर एक भिन्न रंग का प्रकाश उत्पन्न होता है इस प्रकाश का रंग तापमान, दबाव तथा बिजली की वोलटेज पर निर्भर होता है । नीग्रोन गैस लाल-नारंगी प्रकाश आरगोन से लाली लिए हुए नीला प्रकाश, हिलियम से सफेद, पीला, और कभी कभी जामनी प्रकाश तथा क्रिपटोन से पीला, हरा या हल्का बैंगनी प्रकाश और जीनोन का प्रकाश नीला या नीला हरा होता है ।

नीग्रोन गैस में से विद्युत करंट प्रसारित कर अणुओं द्वारा प्रकाश उत्पन्न कराया जाता है । बिजली के करंट से उत्पन्न ऊर्जा, नीग्रोन के कुछ अणुओं के इलैक्ट्रोन को अलग कर देती है, तथा ये इलैक्ट्रोन दुबारा नीग्रोन के अणुओं से जुड़ने पर प्रकाश के रूप में उर्जा छोड़ते हैं ।

ऊपर बताई गई सब गैसें, नोबल गैसें कहलाने वाले एलीमेन्टस के एक परिवार को बनाती हैं । कभी-कभी इन्हें बहुत कम पाई जाने वाली गैसें भी कहा जाता है क्योंकि ये बहुत सरलता से उपलब्ध नहीं होतीं । ये सभी गैसें रसायनिक तौर पर निष्क्रिय होती हैं । इसका अर्थ है, सामान्य स्थिति में जलकर ये गैसें किसी प्रकार के रसायनिक कम्पाउंड उत्पन्न नहीं करतीं ।

इन सब गैसों का मुख्य भंडार साधारण वायु है (हिलियम के अतिरिक्त) क्योंकि हिलियम प्राकृतिक गैस से प्राप्त की जाती है । ये गैसें वायु में—आक्सीजन, नाइट्रोजन, कार्बन-डाई-ओक्साइड तथा और तत्वों के साथ मिश्रित होती हैं । इन नोबल गैसों को प्राप्त करने के लिए हवा को इसके खंडों में विभाजित कर दिया जाता है तथा फिर एक एक करके इन गैसों को अलग किया जाता है । ये कार्य करने के लिए वायु को अत्यन्त थोड़े तापमान तक ठंडा करके तरल बना लिया जाता है । ये तरल वायु ऊँचे टावर में पाइपों द्वारा ले जाकर गर्म की जाती है । जैसे-जैसे हर गैस अपने उबलने के तापमान पर पहुंचती है वो तरल वायु से अलग होकर गैस बन जाती है और एकत्रित कर ली जाती है ।

प्र० : क्या सारे संसार में नव वर्ष का आरम्भ एक ही दिवस से होता है ?

उ० : नव वर्ष के आगमन पर खुशी मनाना संसार की सबसे प्राचीन तथा प्रसन्न करने वाली प्रथा है । परन्तु संसार भर में मनाया जाने वाला कोई भी पर्व इतने अलग-अलग तरीकों तथा इतने भिन्न दिनों पर नहीं मनाया जाता । प्राचीन ग्रीक अपने नववर्ष का आरम्भ नये चन्द्रमा के साथ २१ जून को मनाया करते हैं । जूलियस सीजर से पहले रोमन अपना नव वर्ष पहली मार्च को आरम्भ करते थे । मध्यकाल में अधिकतर यूरोपीय देशों में नव वर्ष २५ मार्च से आरम्भ होता था । परन्तु अब अधिकतर ईसाई धर्म मानने वाले देश नव वर्ष का आरम्भ पहली जनवरी से करते हैं । परन्तु दूसरे यूरोपीय देश अपने देश तथा धर्म के अनुसार
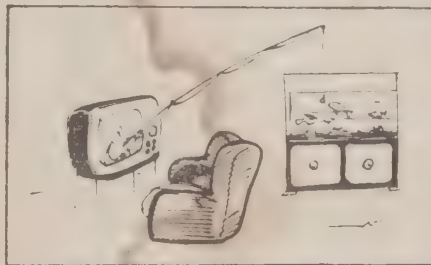
अपने कैलेन्डर के अनुसार ही अपना नव वर्ष आरम्भ करते हैं ।

चीनी दो नव वर्ष दिवस मनाते हैं एक पहली जनवरी को तथा दूसरा चन्द्रमा पर आधारित चीनी कैलेन्डर के अनुसार २१ जनवरी से १९ जनवरी के बीच किसी भी दिन मनाया जाता है । इन्डोनिशिया में भी नव वर्ष दिवस दो मनाये जाते है एक पहली जनवरी को तथा दूसरा इसलाम के कैलेन्डर के अनुसार । ये दिवस हर वर्ष बदलता रहता है । रूस में ओरोथोडोम्स चर्च वाले जूलियन कैलेन्डर के अनुसार १४ जनवरी को नव वर्ष आरम्भ करते हैं ।

'यहूदियों का नव वर्ष दिवस 'रोश हशानाह' सितम्बर के अन्त या अक्तूबर के आरम्भ में मनाया जाता है । वियतनाम में नव वर्ष का आरम्भ प्राय: फरवरी में होता है । ईरान नव वर्ष दिवस २१ मार्च को मनाता है । भारत में हर धर्म के लोग अपने धर्म के अनुसार नव वर्ष का आरम्भ करते हैं । एक नव वर्ष दिवस अप्रैल या मई में भी आता है ।

मोरोक्को के लोग इस्लाम धर्म के पहले माह में मोहर्रम के दसवें दिन नववर्ष आरम्भ करते हैं । कोरिया के लोग जनवरी के पहले तीन दिन उत्सव मना कर अपने नव-वर्ष का आरम्भ करते हैं ।

नव वर्ष पर शुभकामना भेजने की प्रथा भी अत्यन्त ही प्राचीन है । चीन के लोग एक हजार से भी अधिक वर्ष से शुभकामनायें भेजते आ रहे हैं । उनके कार्ड पर भेजने वाले या आने वाले का केवल नाम होता था, संदेश छोड़ने या भेजने का रिवाज तब नहीं था ।

प्र० : स्विंगटेल वायुयान क्या होते हैं और ये किस काम में आते हैं ?

उ० : आधुनिक वायुयान हर प्रकार का हल्का तथा भारी वजन ढोने का कार्य करने के लिए बनाये जाते हैं । कोई भी बड़ी से बड़ी तथा भारी से भारी वस्तु ऐसी नहीं है जिसे वायुयान द्वारा न ले जाया जा सके । ऐसा कार्य करने वाले वायुयानों में से एक प्रकार के विमान स्विंगटेल विमान भी होते हैं ।

कुछ मालवाहक विमानों में यात्री विमानों के समान बाजुओं में दरवाजे होते हैं । औषधियां, खाने की हर प्रकार की वस्तुएं यहां तक की पशु तथा घोड़े भी इन विमानों में आसानी से लाद लिये जाते हैं । इसके अतिरिक्त दूसरे प्रकार के विमानों के बड़े-बड़े दरवाजे विमान के अगले भाग में होते हैं जिनसे इन विमानों में सामान लादा जाता है । इस प्रकार के विमान कार, टैंक, लौरी इत्यादि भारी वाहन लादने के विशेष काम में लाये जाते हैं । ये वाहन एक रैम्प पर से चलाकर इनके अगले भाग दरवाजों से विमान के भीतर ले जाये जाते हैं । इससे भी विचित्र तथा नये प्रकार के विमान हैं जिनका पूंछ का हिस्सा पूरा का पूरा एक ओर को खिसक जाता है और विमान में अत्यन्त सुविधा पूर्वक माल उतारा और चढ़ाया जाता है । अगले तथा पिछले दोनों ओर से ही माल उतारने चढ़ाने की सुविधा होने के कारण, काम बहुत आसानी से तथा शीघ्र हो जाता है । पूंछ घुमाने वाले इस विशेष विमान में लगभग पन्द्रह टन सामान ले जाया जा सकता है । इस प्रकार के विमान का नमूना सन् १९२० में ही बन गया था । परन्तु उस समय इसका उपयोग हो सकने के बारे में कुछ निश्चित नहीं था ।

क्यों और कैसे ?
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

आपको पता लगता है कि

आप बच्चे नहीं हैं जब...

जब शाम को घर पर आप फिल्मी मैगजीन पढ़ें और कोई रोके नहीं। न कोई यह कहे कि होम वर्क क्यों नहीं करता।

जब आइसक्रीम वाला दुनिया का सबसे भाग्यशाली व्यक्ति लगना बंद हो जाता है।

जब हर छः महीने बाद पैर जूतों से बड़ा होने का कार्यक्रम बंद कर देते हैं।

जब आप नये कपड़े पहन बाहर जाते हैं और लौटने पर कपड़े वैसे ही साफ पाते हैं।

जब सोते समय चार पाई के नीचे पांच सिर और बारह टांगों वाले भूत के होने की आशंका नहीं सताती।
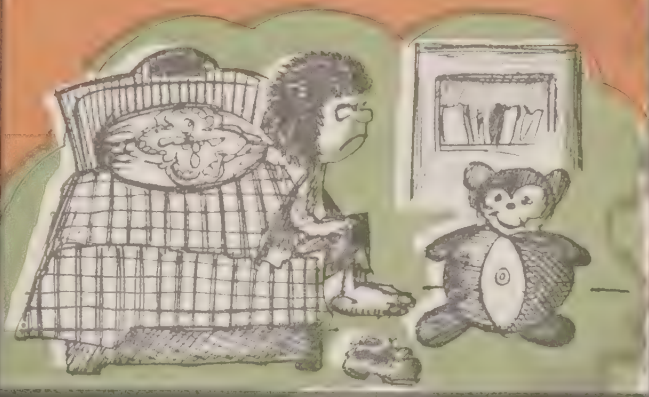
जब आप अभी फिट आने वाले कपड़े खरीदते हैं न कि छः महीने बाद फिट आने वाले।
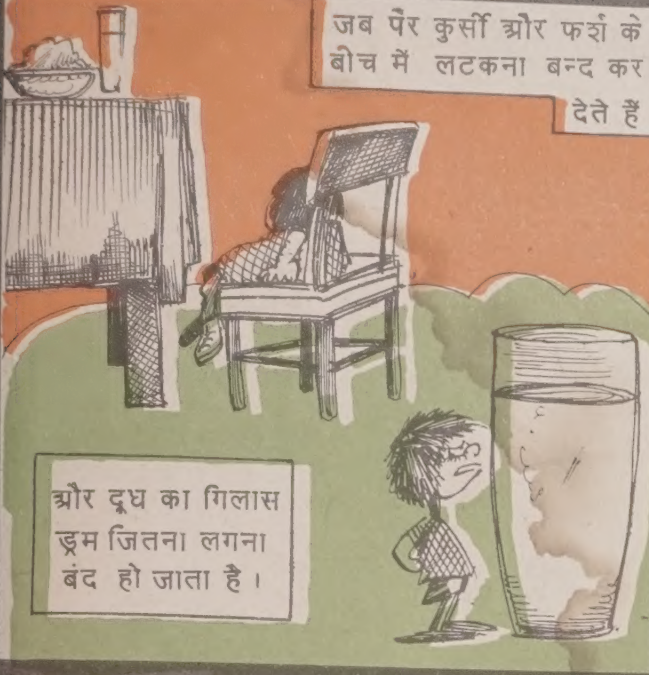
जब कपड़े मैले करने व खुद भी मैले हो जाने के बढ़िया बहाने मिल जाते हैं।

जब आप अपने लिये महंगे से महंगा खिलौना ख़रीद पाते हैं।

जब व्यस्क पिक्चर की टिकट लेने के लिए आपको नकली मूंछ नहीं लगानी पड़ती।

जब आपको चाबी से चलने वाली नहीं बल्कि आइसक्रीम और फेंटा से चलने वाली गुड़िया मिलती है।

दीवाना-कैमल

रंग प्रतियोगिता

निःशुल्क प्रवेश

पुरस्कार जीतिए:

कैमल-पहला इनाम ३०

कैमल-दूसरा इनाम २०

कैमल-तीसरा इनाम १०

कैमल-आश्वासन इनाम ५

दीवाना-आश्वासन इनाम ५

कैमल-सर्टिफिकेट १०

केवल १२ वर्ष तक के विद्यार्थी प्रतियोगितामें शामील हो सकते हैं। उपर दिये गये चित्रमें अपने मनचाहे कैमल रंग भर दिजिए
रंगीन प्रवेश-पत्र नीचे दिये गए पत्ते पर भेजिए, दीवाना, ८-बी, बहादूर शहा जाफर मार्ग, नयी दिल्ली ११०००२
परिणाम का निर्णय अन्तिम निर्णय होगा। और कोई भी पत्रव्यवहार, नहीं किया जाएगा।

नाम .... **उम्र** ....

पता ....

कृपया ध्यान रखिए कि पूरा चित्र पेंट किया जाये।

चित्र भेजने की अंतिम तारीख: ३१-३-८०

CONTEST N
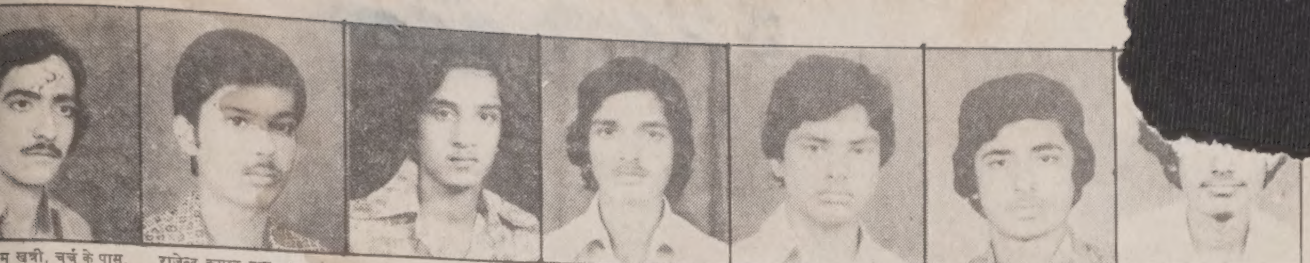
...म खत्री, चर्च के पास, ... बाजार, रायपुर, ...). १७ वर्ष, पत्र- ... दीवाना पढ़ना, फर- ...जना ।

राजेन्द्र कुमार राव, म० नं० एच०/४२, पंचशील नगर, रायपुर, (म० प्र०), १७ वर्ष, क्रिकेट खेलना, उपन्यास पढ़ना, फिल्म देखना ।

अरविन्द कुमार गुप्ता, ४६ मदन मोहन बर्मन स्ट्रीट, कलकत्ता, १८ वर्ष, क्रिकेट, कमेंट्री सुनना, फिल्म देखना, पत्र मित्रता ।

विद्या सागर पाटिल, सैक्टर ६, सड़क नं० १३, ब्लाक नं० ६, भिलाई नगर, (म० प्र०), १५ वर्ष, पत्र-मित्रता करना ।

धर्मेन्द्र कुमार दुर्घा, किशोर सदन, नाथानी बाड़ा, रायपुर, (म० प्र०), १३ वर्ष, पत्र मित्रता, फिल्म देखना, फरमाईश भेजना ।

सुरेश कुमार मलंग, न्यू० इण्डिया फेन्सी स्टोर, बस स्टेण्ड, बलांगीर, (उड़ीसा), १७ वर्ष, बैंड मिन्टन खेलना, दीवाना पढ़ना ।

रमेश कुमार अरोड़ा, द्वारा श्री मुन्शी राम, १६१/७, नई कालोनी, कुरुक्षेत्र, १६ वर्ष, दीवाना पढ़ना, लड़कों से दोस्ती करना ।
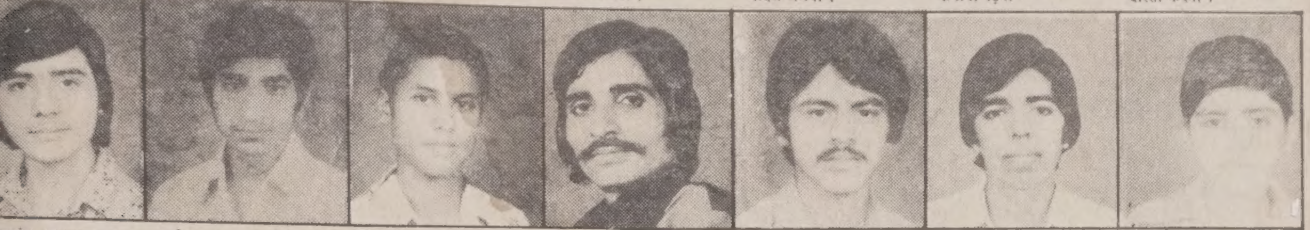
...मलंग, नारायण दास ..., बलांगीर, (उड़ीसा), ..., पत्र मित्रता करना, ...टिकट संग्रह करना, ...खना ।

अशोक कुमार भारद्वाज, पाटौदी टेरीन सेन्टर, सराफा बाजार, ग्वालियर, १७ वर्ष, दूसरों के काम में मदद करना, क्रिकेट खेलना ।

शुभं करन नाथ, मांगीलाल, शान्तिलाल नाहाटा, राजाई डेम चुरु, (राजस्थान), १८ वर्ष, ताश खेलना, दीवाना पढ़ना तथा फिल्म देखना ।

खान निगार वारसी, लक्ष्मी लाज, शाहजहांपुर, यू० पी०, १५ वर्ष, लड़कों से मित्रता, करना, बच्चों से प्यार करना, डाक भेजना ।

दिनेश कुमार कपूर, कपूर निवास, पालमपुर, १६ वर्ष, फिल्में देखना, कार चलाना, दीवाना पढ़ना तार भेजना, टेलीफोन करना ।

इन्द्र कुमार नारवानी, 'आजा' सी० एम० डी० कालेज, बी० ए० प्रथम वर्ष बिलासपुर, (म० प्र०), १८ वर्ष, पत्र मित्रता करना ।

राजेश कुमार भावनानी, द्वारा श्री ऊमर भावनानी, ४/८८१, फाफाडीह, रायपुर, (म० प्र०), १३ वर्ष, पत्र मित्रता करना ।

...म डंगोल, ८/२४, ...डबल टोल, काठमाण्डो, ... १७ वर्ष, रेडियो ... दीवाना पढ़ना, तार ... ।

मदन बहादुर तुलाधर, म० नं० ६/६३५, पुरानोमंसार काठमाण्डो, नेपाल, १७ वर्ष, दीवाना पढ़ना पत्र मित्रता करना ।

रघवीर सिह वर्मा, जैन मोहल्ला, पानीपत, जिला करनाल, २२ वर्ष, ताश खेलना, किताबें पढ़ना तथा क्रिकेट खेलना ।

कन्हैया लाल केसवानी, अमला टोला, कटिहार, १८ वर्ष, पत्र मित्रता, बड़ों का आदर करना, बच्चों से प्यार करना, तमाशा देखना ।

मोहम्मद इकबाल मोदी, कमला नेहरु नगर, घोपासनी रोड जोधपुर, १६ वर्ष, पत्र लिखना, तमाशा देखना, नदी में तैरना ।

रंजीत बुधवानी, द्वारा सुरेश बुधवानी, बैरन बाजार, रायपुर, (म० प्र०), १६ वर्ष, रेलगाड़ी में सफर करना, पत्र लिखना ।

मौ० जाहिद कुरैशी (जिट्टी), ५२७ खालापार, मुजफ्फर नगर, १८ वर्ष, कसरत करना, मिस्टर उत्तर प्रदेश बनना, पत्र व्यवहार करना

...फैयाज हसन, हसन ..., करिमचक, (छपरा), ..., क्रिकेट खेलना, ताश ... दीवाना पढ़ना और ...जमा करना ।

जनक कुमार बुद्धिराज, एन० एल० पथ, फारबिसगंज, पूर्णिया, (बिहार) २४ वर्ष, संगीत बजाना, व्यापार करना, पत्र मित्रता ।

प्रताप मध्यान द्वारा करा मल मध्यान, छोटी लाइन, फाफाडीह, रायपुर, (म०प्र०), १६ वर्ष, पत्र मित्रता करना, नदी में तैरना ।

श्रवण कुमार पाण्डेय, दीवान मोहल्ला, बाग पातो, पटना सिटी, १८ वर्ष, पत्र मित्रता, बच्चों से प्यार करना, उपन्यास पढ़ना ।

राधेश्याम बोयल, सी. ११ आई. ए. खेतड़ी नगर, जिला झुन्झुनू, (राजस्थान), १८ वर्ष, दीवाना पढ़ना, ताश खेलना ।

अनिल कुमार सैनी, मातागढ़, चिलकाना रोड, अनिल निवास म० न० ८/१२८६, सहारनपुर, १७ वर्ष, काम में रुचि करना, पढ़ने में मन लगाना ।

भुपेन्द्र सिह विरदी, द्वारा सागर प्रताप सिह कुपण्डोल, काठमाण्डू, (नेपाल), १५ वर्ष, डाक डिकट संग्रह करना, मोटर-साईकिल चलाना ।
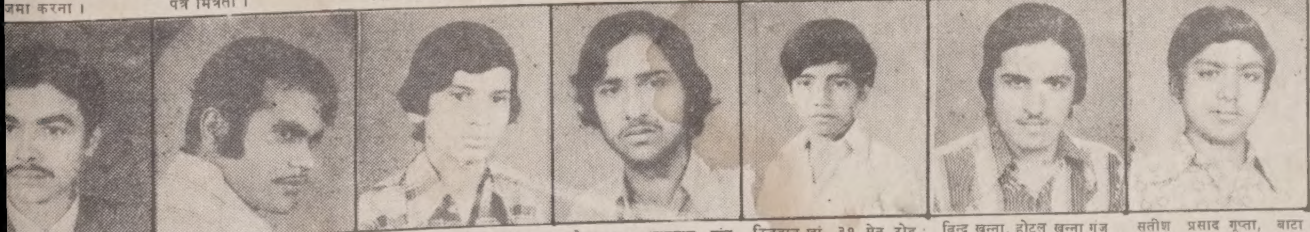
...कुमार बजाज, नीर ... छोटा सराय उज्जैन, ..., पत्र मित्रता व बच्चों ... करना, दीवाना पढ़ना, ...श भेजना ।

रोमेल शर्मा "मधू" भारत-साल्वेन्टस बराडा रोड, शाहाबाद (म० प्र०), २० वर्ष, दीवाना पढ़ना, पढ़ने में मन लगाना ।

आलोक कुमार गुप्ता, सिकन्दरा राऊ, (यू० पी०), १४ वर्ष, उपन्यास पढ़ना, बड़ों का आदर करना, मां-बापों की सेवा करना ।

सुरेन्द्र कुमार भारद्वाज, गांव अलापुर, कस्बा अलापुर, जि० बदायूं (यू० पी०), २५ वर्ष, दीवाना पढ़ना, हवा में टहलना ।

रिजवान खां, ३१ मेन रोड. रांची, १२ वर्ष, दीवाना पढ़ना, कविता लिखना, पत्र डालना, नदी में तैरना, हवा में दौड़ना ।

बिन्दु खन्ना, होटल खन्ना गंज पारा, रायपुर, (म० प्र०), २० वर्ष, फिल्म देखना, माता-पिता की सेवा करना, पत्र मित्रता करना ।

सतीश प्रसाद गुप्ता, बाटा मोड़, टेकारी रोड, पो० गया, जि० गया, १५ वर्ष, कार्टून बनाना, स्वास्थ्य पर ध्यान देना ।

...प्रकाश, २३७१, नेहरु ..., हाथरस, (उ०प्र०), ..., वैज्ञानिक उपन्यास ...त्रिकायें पढ़ना, तार ...

किशन कुमार बाथम द्वारा अशोक मेडिकल हाल, माल रोड, मुरार ग्वालियर, (म० प्र०), १६ वर्ष, कहानी, कविता लिखना ।

कन्हैया लाल बाधवानी, खियाल दास, अमला टोला, कटिहार, १८ वर्ष, पत्र मित्रता करना, दीवाना पढ़ना, ताश खेलना ।

मोती लाल अग्रवाल, प्रथम वर्ष वाणिज्य, ब. ज. मि. रामपुरिया, जैन कालेज, एकाउण्ट न० २११, बीकानेर, (राज०), १७ वर्ष, ।

अमित कुमार, सिगार साड़ी सेन्टर, बस स्टेण्ड, बलांगीर, (उड़ीसा), १८ वर्ष, बच्चों से प्यार करना, डाक टिकट संग्रह करना, दीवाना पढ़ना ।

दीवाना फ्रैंडस क्लब

दीवाना फ्रैंड्स क्लब के मेम्बर बन कर फ्रैंडशिप के कालम में अपना फोटो छपवाइये । मेम्बर बनने के लिए कूपन-भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिए जिसे दीवाना तेज साप्ताहिक में प्रकाशित कर दिया जायेगा

पूरा नाम लिखिए

हमारा पताः दीवाना फ्रैंडस क्लब
८-ब, बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-११०००२
कृपया अपना नाम व पता हिन्दी में साफ-साफ लिखें।
नाम
पता
शौक

...नया बाजार, दिल्ली में तेज प्राइवेट लिमिटेड के लिए पन्नालाल जैन द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित प्रबन्ध सम्पादक विश्वबन्धु गुप्ता ।
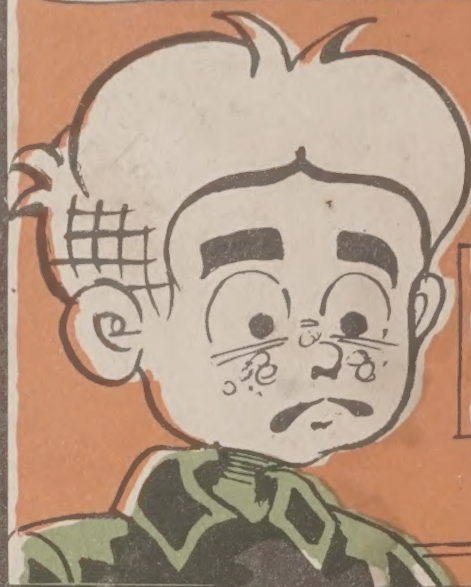
छुटकू अकछीं
लिटल अर्ची की दीवाना पैरोडी
जगहैट, आज छुटकू का मुंह सूखे छुहारे जैसा क्यों हो रहा है ? रात भर जाग कर पहाड़े याद तो नहीं करता रहा ?
पहाड़े तो यह सिर्फ दिन दहाड़े ही याद करता है। छुहारा बनने का कारण तो कुछ और ही है। आजकल हमारे स्कूल के साथ फॉरन एक्सचेंज का प्रोग्राम जो चल रहा है।
बेटी, सुना तुमने ? आजकल हमारे स्कूल का फॉरन एक्स चेंज प्रोग्राम चल रहा है। विदेशों से कुछ बच्चे हमारे स्कूल आये हैं और हमारे स्कूल के कुछ लड़के विदेश गये हैं। इसी वजह से छुटकू का मुंह सूखे छुहारे जैसा हो रहा है।
यह तो बुरा हुआ। पहले उसका मुंह कागजी नीबू जैसा था।
अब उससे बात करने में नींबू पानी का मजा नहीं आयेगा।
सुना तुमने टुंटू ? आज ही एक विदेशी लड़का हमारे स्कूल आ पहुंचा है। वह छुटकू वाली बेंच पर बैठा है।
अच्छा तो इसी लिये उसका मुंह सूखे छुहारे जैसा हो रहा है।
चलो जरा क्लास रूम में चल कर देखें। तुम्हें दिखाता हूं।
चलो देखें। स्वीडन से आया है या फ्रांस से ?
हिन्दुस्तान से आया है। वह देखो छुटकू के साथ बैठा है।
Very Silly
लेकिन छुटकू को इसके साथ बैठने में परेशानी क्या है ? क्या यह नहाता नहीं है ?
तुम्हें तो पता ही है कि छुटकू अकछीं अपने पालतू चूहे साथ स्कूल ले आता है और क्लास में अपने डैस्क में रखता है। फॉरन एक्सचेंज वाला यह इंडियन स्टूडेंट भी अपने पालतू जानवर साथ ले आया है। और उन्हें डेस्क में चूहों के साथ ही बन्द कर दिया है और इसके पालतू जीव सांप हैं।
EEEE